ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-माघ-फाल्गुन संवत् 2072
फरवरी 2016

अंक 126, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

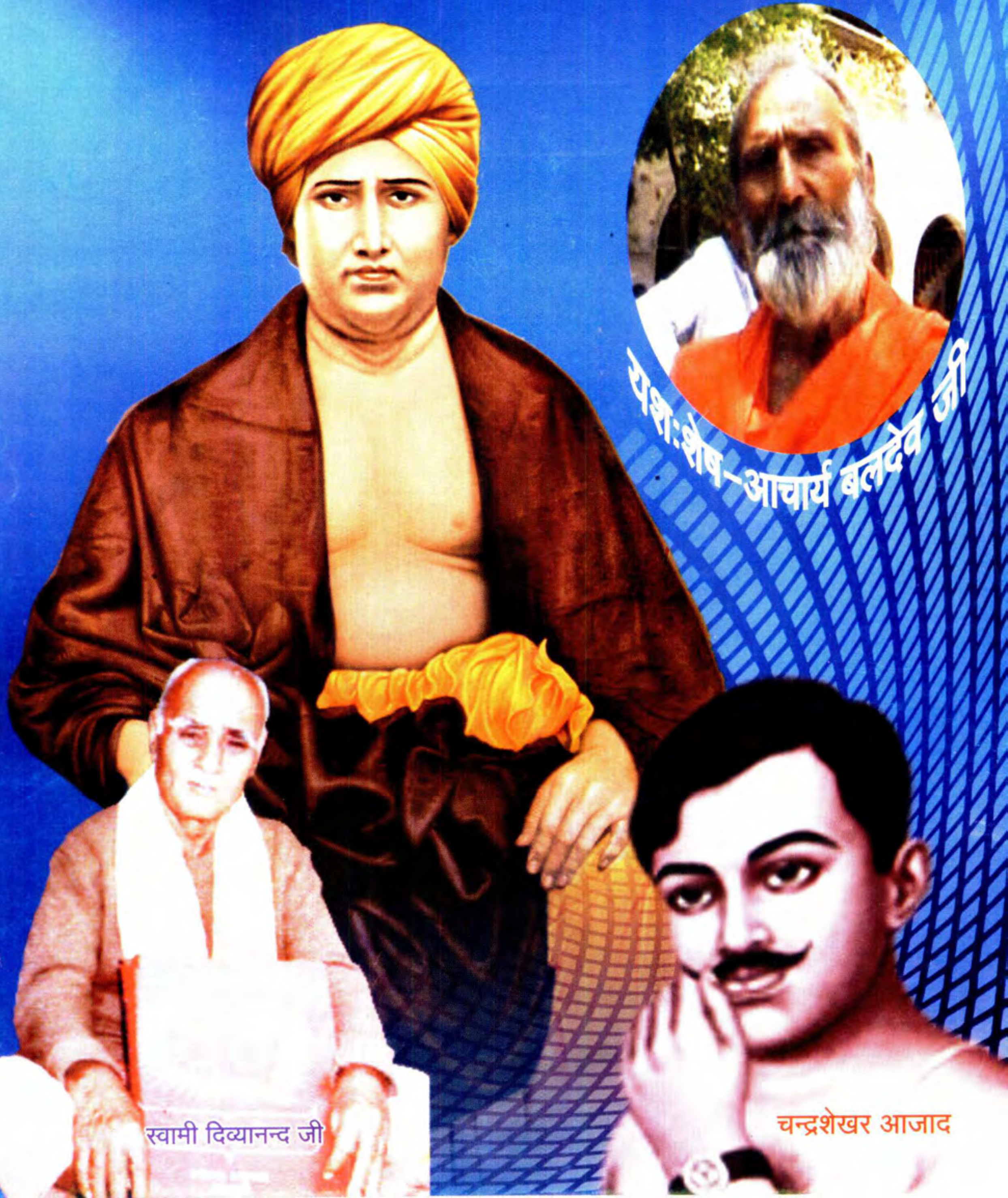

दिनांक 15 से 17 जनवरी 2016 तक सम्पन्न गुरुकुल आश्रम सलखिया (रायगढ़) का भव्य रजत जयंती महोत्सव की झलकियाँ

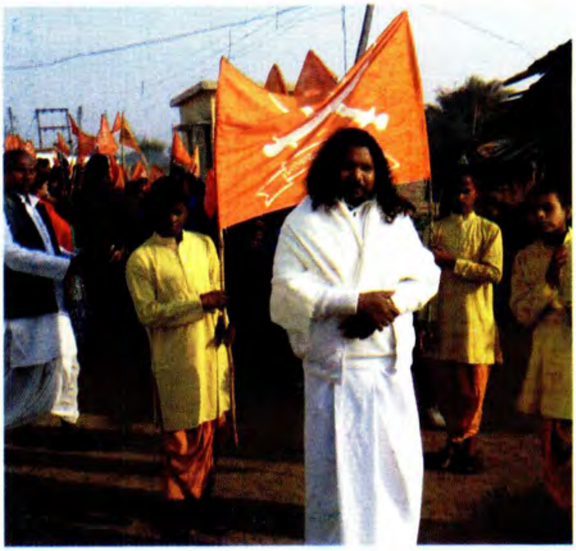

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - ११, अंक ८ ओ३म् मास/सन् - फरवरी - २०१६

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११७
दयानन्दाब्द - १९२

श्रुतिप्रणीत – सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त – दीप्त वेद – सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सञ्ज्ञसञ्ज्ञकम्,
सभाग्निदूत – पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२,
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

विषय – सूची

पृष्ठ क्र.

१.	वेदामृत : नमः हमारी पुकार सुनो	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : चरित्रवान् युवा, राष्ट्र का आधार.	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	यह दिखावा है या हृदय परिवर्तन ?	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	०८
४.	सोलह संस्कारों से ही मानव का नवनिर्माण सम्भव है .	डॉ. अशोक आर्य	१०
५.	नारी संबंधी भ्रान्त चिन्तन को वैदिक लताड़	श्रीमती सुकान्ती आर्या	१३
६.	गृह्यसूत्रों की उपादेयता ?	उदयन आचार्य	१५
७.	"वैराग्य"	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१७
८.	महर्षि दयानन्द का आदर्श एवं प्रेरक जीवन	मनमोहन कुमार आर्य	२०
९.	दिल में एक क्रांति लिए एक दिलेर : शहीद चन्द्रशेखर आजाद		२३
१०.	दयानन्दध्येय धर्मा– स्वामी दिव्यानन्द	आचार्य कर्मवीर	२५
११.	होमियोपैथी से पैरालिसिस (लकवा) का सफल इलाज	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२७
१२.	समाचार दर्पण		२९

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

हमारी पुकार सुनो

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां, किमङ्ग स्वाहुरभिशस्तिपां नः।
किमङ्ग नः पश्यति निद्यमानान्, ब्रह्मद्विषे तपुर्षि हेतिमस्य॥ ऋग्. ६.५२.०३

ऋषिः ऋजिश्वा भारद्वाजः। देवता **विश्वेदेवाः**। छन्दः त्रिष्टूप्।

● **(अङ्ग सोम)** हे सोम प्रभु ! **(किं)** किसलिए **(त्वा)** तुम्हें **(ब्रह्मणः)** ब्रह्मत्व का **(गोपां)** रक्षक **(अङ्ग)** हे, प्रिय ! **(किं)** किसलिए **(त्वा)** तुम्हें **(नः)** हमारा **(अभिशस्तिपां)** अभिशस्ति से रक्षा करने वाला **(आहुः)** कहते हैं ? **(अङ्ग)** हे भद्र ! **(किं)** क्यों **(नः)** हमें **(निद्यमानान्)** निन्दा का विषय बने हुए **(पश्यसि)** देख रहे हो ? **(ब्रह्मद्विषे)** ब्रह्म-विरोधी पर **(तपुर्षि)** सन्तापक **(हेतिं)** वज्र को **(अस्य)** फेंको।

हे मेरे प्रभुवर ! तुम सोम हो, चन्द्र हो, सद्विचार-समुद्र को बढ़ाने वाले तथा दुर्भाव-तिमिर को नष्ट करने वाले हो। मनीषी-जन पुकार-पुकारकर कहते हैं कि तुम 'ब्रह्म' के रक्षक हो, ब्रह्मशब्दवाच्य सत्य, ज्ञान, विवेक, सत्कर्म, सदाचार, धर्म, आस्तिकता, बृहत्ता, उदारता, उत्कर्ष आदि की रक्षा करने वाले हो। हे भगवन् ! तुम्हारे विषय में बार-बार कहा जाता है कि जब कभी सत्य और धर्म पर आपत्ति आती है, तब तुम उसकी रक्षा करते हो। पर हमारे विषय में तुम्हारी यह प्रशस्ति चरितार्थ क्यों नहीं हो रही ? तुम्हारे स्तुति-गीत गाते हुए तुम्हारे भक्त सदा यह दुहाई देते हैं कि तुम अभिशस्ति से दुर्भाग्य, विपत्ति, अनिष्ट, हिंसा, अभिशाप, निन्दा, अपयश, अपमान आदि से, त्राण करने वाले हो। पर हम तुम्हारी पुकार क्यों नहीं सुनते ? देखो तो, हमारे व्यक्तियों की, हमारे समाज की, हमारे देश की क्या अवस्था हो रही है। पहले कभी हमारा देश सब गुण-गरिमाओं से अलंकृत था। हमारे देश के अश्वपति कैकेय सदृश राजा लोग यह घोषणा करते थे कि हमारे देश में न कोई चोर है, न कृपण है, न मद्यपायी है, न अनग्निहोत्री है, न अविद्वान्, न व्यभिचारी पुरुष है, न व्याभिचारिणी स्त्री है। किन्तु आज तो बड़े-बड़े कुख्यात दस्यु निरीह प्रजा को लूट रहे हैं, तस्कर-व्यापार हो रहा है, मिलावट-रहित शुद्ध वस्तुएं दुर्लभ हो रही है। सत्य लुप्त हो रहा है, अविद्या बढ़ रही है, अविवेक पनप रहा है, सत्कर्म और सदाचार नामशेष हो रहे हैं। अधर्म धर्म का स्थान ले रहा है, नास्तिकता फैशन बन रही है, अनुदारता हृदय-हार हो रही है। हम दुर्भाग्य-ग्रस्त हो रहे हैं। अनिष्ट हमें दबोच रहा है, अभिशाप हर पर गिर रहा है।

हे सोम प्रभु ! क्या तुम देख नहीं रहे कि हम निन्दा, अपयश और अपमान के पात्र बनते जा रहे हैं ? तो फिर हमसे विमुख क्यों हो ? आओ, हमारे मनों में, हमारे समाज में और हमारे राष्ट्र में जो ब्रह्म-विरोधी विचार और कर्म व्याप्त हो रहे हैं, उन पर पूरे बल के साथ वज्र-प्रहार करके उन्हें निर्मूल कर दो।

संस्कृतार्थ :- १. णिदि कुत्सायाम्। २. असु क्षेपणे, लोट्।

सम्पादकीय

चरित्रवान् युवा, राष्ट्र का आधार

प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा की परिभाषा का विश्लेषण करते हुए कहा था उसे ही सही रूप में शिक्षा कही जा सकती है 'जिससे सुचरित्रता की वृद्धि हो' स्पष्ट है स्वामी जी महाराज चरित्र को शिक्षा का मानदण्ड स्वीकारते थे। क्योंकि यही वह वैशिष्ट्य है जिससे हमेशा से विदेशी इस देश का गौरवगान करते नहीं अघाते रहे हैं। सभी शिक्षा शास्त्री इस बात को लेकर एकमत हैं कि आचरण की श्रेष्ठता शिक्षा का मूल आधार है।

भगवान कृष्ण ने गीता में कहा कि

सुहृन्मित्राण्युदासीन मध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु। साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते॥

अर्थात् जो पुरुष सुहृद् (सर्वरहित सबका हित करने वाला) मित्र, बैरी, उदासीन (पक्षपात रहित) मध्यस्थ (दोनों ओर की भलाई चाहने वाला) द्वेषी और बन्धुगणों में धर्मात्माओं में और पापियों में भी, समान भाव वाला है वह अति श्रेष्ठ है।

वस्तुतः चरित्र एक ऐसा विस्तृत आयाम है जिसे शब्दों की सीमा में बांधना एक अत्यन्त दुष्कर कार्य है। चरित्र वास्तव में व्यावहारिक रूप से प्रकट होने वाला गुण है, जो अपने अनेक तत्वों के साथ मुखरित होता है। मानव शैशव-काल से ही अपने व्यवहार से अपने (आचरण) चरित्र को पुष्ट करता है। चरित्र निर्माण वास्तव में मानवीय गुणों का विकास ही है। इसके लिए प्रारम्भ से व्यक्ति और समाज को सजग रहना चाहिए। युवावस्था में चरित्र अपनी परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। अतः युवावर्ग को 'चरित्र निर्माण' के प्रति अधिक सचेत रहना चाहिए। एक कहावत के अनुसार 'जवानी अन्धी होती है' भाव यह कि जवानी के जोश में मनुष्य अपना होश खो बैठता है। इसीलिए उसे सन्मार्ग पर लाने के लिए पूरी जिम्मेदारी समाज के दूसरे लोगों-माता-पिता, आस-पड़ोस, अध्यापक और मित्र-मंडली पर आ जाती है। अतः युवकों के चरित्र निर्माण हेतु इन सबको मिलकर काम करना चाहिए।

चरित्र पुरुष की सुगन्ध के समान ही अन्तर्निहित होते हुए चारों ओर के वातावरण को अपने होने का एहसास कराता है। यह बात अलग है कि सच्चरित और दुष्चरित दोनों ही प्रकार के चरित्र अपने-अपने ढंग से दूसरों को प्रभावित करते हैं। देश, काल और परिस्थिति के अनुसार चरित्र को अलग-अलग दृष्टियों से देखा जाता है। भारतीय परिवेश में कामभावना को दृष्टिगत रखकर चरित्र को आंका जाता है। हमारे यहां तो साहित्यिक विधाओं-उपन्यास, नाटक, कहानी एकांकी आदि में

भी कामुक पात्र को हीन दृष्टि से देखा जाता है, फिर मनुष्य की तो बात ही क्या है ? जबकि चरित्र केवल कामभावना नहीं है। पाश्चात्य समाज में कामभावना को चरित्र के साथ नहीं जोड़ा जाता। वास्तव में चरित्र तो एक आचरण है जिसे हम दूसरों से अच्छे-बुरे कार्यों के लिए प्रयुक्त करते हैं। हमारा दूसरों के प्रति किया गया व्यवहार ही हमारे आचरण का बिम्ब है।

युवावर्ग के चरित्र-निर्माण के लिए सबसे पहले उनमें बीज रूप में विद्यमान का विकास करना अनिवार्य है। अनुकूल वातावरण न मिलने पर अंकुरित पौधा भी मुरझा जाता है। अतः बच्चों को प्रारम्भिक काल से ही उनमें विद्यमान कलात्मक रुचियों के विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चे की प्रत्येक क्रिया को ध्यानपूर्वक देखें उसे रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें। हमारे यहां देखने में आया है कि अधिकांश माता-पिता धन-हानि के भय से बच्चों को छोटी-छोटी बातों से रोकते रहंते हैं जिससे उनकी भावनाएं दमित एवं कुण्ठित हो जाती है। हम उन्हें हर बात से मना करेंगे तो उनकी जिज्ञासा और अधिक तीव्र होगी और एक दिन विध्वंसात्मक रूप धारण कर लेंगी। हमें बच्चों की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उन्हें पूर्ण सहयोग देना चाहिए। हमें उसे वांछित जानकारी प्रदान कर उसे सन्तुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा यही असन्तुष्ट प्रवृत्ति युवावस्था में उसे आन्दोलनों की ओर उन्मुख करने में सहायक हो सकती है। बचपन से ही उसमें आस-पड़ोस, मित्र-मण्डली आदि से सद्व्यवहार की शिक्षा दी जानी चाहिए। बचपन में डाली गई अच्छी आदतों की नींव पर ही युवावस्था में चरित्र रूपी भवन निर्मित हो सकेगा।

विद्यार्थी काल में बच्चे का सम्पर्क माता-पिता के बाद अपने अध्यापकों से अधिक होता है। यह एक ऐसी अवस्था है जब विद्यार्थी माता-पिता की अपेक्षा अपने अध्यापक के व्यक्तित्व और व्यवहार से अधिक प्रभाव ग्रहण करता है। अतः अध्यापक की यह जिम्मेदारी है कि वह इन अल्प बुद्धि बालकों का मार्ग-दर्शन करें। ये बालक ही देश के कर्णधार हैं इस भावना से उनमें देश-प्रेम जैसी भावनाओं को उभारने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि जीवन में कभी भी विद्रोह की भावना न पनपे। अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यालय का वातावरण इतना शुद्ध बनाएं कि बच्चे स्वयम् आदर्शों की सीढ़ियां चढ़ सकें। **यही बात महापुरुषों की जीवनियों के माध्यम से धर्म-शिक्षा को अनिवार्य करने के पीछे डी.ए.वी. शिक्षा आन्दोलन का यही उद्देश्य रहा है।**

युवावस्था में मनुष्य का मन इधर-उधर भटकता अवश्य है मगर सही मार्गदर्शक मिल जाने पर यह नियन्त्रित भी हो जाता है। अगर सही मार्गदर्शक मिल जाए तो मनुष्य कोई न कोई रचनात्मक कार्य करके कोई ऐसा अद्‌भुत करिश्मा करता है कि विश्व ख्याति पा लेता है। इसका कारण यह है कि युवावस्था में मस्तिष्क पूर्णतः विकसित हो जाता है। अच्छे, बुरे, लाभ-हानि, नैतिक-अनैतिक की पहचान करने लग जाता है। अगर इस अवस्था में कोई नेक राह पर चलने लगे तो वह पीछे हटने का नाम नहीं लेता। दूसरी ओर अगर कोई बदी की राह पर चलने लगे तो वह भी शिखर को छू लेता है। वास्तव में युवावस्था में नाम कमाने, यश पाने और लोगों का ध्यान अपनी ओर खीचने की एक ललक होती है जो किसी भी ढंग से पूरा करने की धुन सवार हो जाती है। इसी धुन में मनुष्य जिस राह पर भी चले चलता जाता है और चरम सीमा को पा लेता है।

"बदनाम होंगे तो क्या नाम न होगा।" अतः युवावस्था में चरित्र-निर्माण की ओर विशेष ध्यान देने की

आवश्यकता होती है। इसके लिए युवा-वर्ग को नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराने के लिए सद्साहित्य के अध्ययन, चिन्तन, मनन एवं क्रियान्वयन की आवश्यकता है। नैतिकता के आधार पर ही वह सद्व्यवहार सीखता है। उसकी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उसे नये-नये विषयों का ज्ञान दिया जाना वांछित है। गीता के महावाक्य के अनुसार **'संशयात्मा विनश्यति'** सन्देह युक्त आत्मा विनष्ट हो जाती है। अतः प्रत्येक सन्देह का निराकरण ही युवावर्ग को विनाश के कगार पर खड़ा होने से बचा सकता है। आज के युग की सबसे बड़ी मांग युवावर्ग के असन्तोष को दूर कर उनमें मनोबल भर कर सन्मार्ग पर लाने की है। यह काम सच्चरित्र व्यक्ति ही कर सकते हैं। सबसे पहले अन्तःकरण की शुद्धता अनिवार्य है। अन्तःकरण की शुद्धि से ही सद्विचार बनते हैं। यह काम महापुरुषों के आप्तवाक्यों तथा धर्मोपदेशों से ही सम्भव है जिससे महापुरुषों के जीवन के महान् गुणों का प्रभाव युवा-वर्ग पर पड़ सके। भारत में ऐसे महापुरुषों की कमी नहीं है। **आत्म-नियन्त्रण, आत्मविश्वास और आत्मबल** जैसे गुण इन्हीं जीवनियों से उपलब्ध होते हैं। जिसमें यह तीन गुण आ जाएं वह संसार को विजय करने में सक्षम हो जाता है। आत्म-नियन्त्रण चरित्र निर्माण की नींव है। आरम्भ से ही इसका अभ्यास किया जाना अपेक्षित है। इसी से आत्मबल और आत्मविश्वास की भावनाएँ प्रबल होती है। इन गुणों से युक्त व्यक्ति ही कर्मनिष्ठ और दृढ़प्रतिज्ञ होता है। यही गुण व्यक्तित्व में निखार लाते हैं और समाज में प्रतिष्ठा दिलाते हैं।

वास्तव में अगर देखा जाए तो चरित्र निर्माण किसी वस्तु विशेष के भौतिक निर्माण जैसी बात नहीं है। यह तो व्यक्ति के अन्दर विद्यमान सद्गुणों का विकास है जो नैतिकता के आधार पर मानव-मूल्यों को पुष्ट करते हैं। मानव की भावनाओं को मुखरित करते हैं। इसके लिए वंशक्रम, वातावरण, स्वभाव और सम्पर्क सभी मिलकर सहयोग देते हैं। चरित्र निर्माण किसी एक व्यक्ति या संस्था पर आश्रित नहीं है। यह तो एक वृहत्कार्य है जो युवा-वर्ग को सही ढंग से जीवन-यापन करने का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके लिए घर, व्यक्ति, समाज संस्थाओं सभी को एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। यह सर्वांगीण विकास ही चरित्र का दूसरा नाम है। मगर यह काम अकेले शिक्षा नहीं कर सकती।

युवावर्ग देश का भविष्य है। इसे अपने महत्व की पहचान कराने की आवश्यकता है। युवकों को चाहिए अपने जीवन में महानतम् कार्य करने की आदत डालें। उच्चादर्शों को अपनाएं। प्रेम, दया, सहयोग, सद्भावना, त्याग, देश-प्रेम, सहानुभूति जैसे नैतिक गुणों को अपनाएं जिससे अपने लिए और देश के लिए कुछ कर सकें। अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए अच्छे आचरण के द्वारा चरित्रवान् बनें। अपने अमूल्य जीवन में देश और समाज के लिए रचनात्मक कार्य करने चाहिए। कोई भी देश तब तक समर्थ और शक्तिशाली नहीं हो सकता जब तक उस देश के युवक सच्चरित्र नहीं होते। जाति, धन, विद्या, अधिकार, बुद्धि, बल आदि के प्रति अभिमानी न होकर नम्रता के भाव को ग्रहण कर दत्तचित्त होकर कर्त्तव्य पालन करें। ऐसे चरित्रवान् नवयुवकों से ही हमारी सभ्यता और संस्कृति की खोई हुई आभा पुनः लौट सकती है। किसी जमाने में अपने देश की जो आकर्षक एवं गौरवमीय तस्वीर पूरी दुनियाँ के दिलों दिमाग में अंकित थी वह फिर से हो जाय यही प्रभु से प्रार्थना है प्रभु हमें शक्ति सामर्थ्य योग्यता व क्षमता प्रदान करें जिससे कवि की निम्न पंक्तियाँ साकार हो जाये।

"कहेगा जगत फिर एक स्वर से सारा, वही श्रेष्ठ भारत गुरू है हमारा ॥ "

- आचार्य कर्मवीर

राष्ट्रीय

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक
(भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष)

पाक पर पठानकोट के दोषियों पर कार्रवाई का भीतर-बाहर से दबाव

यह दिखावा है या हृदय परिवर्तन ?

भारत पाक विदेश सचिवों की वार्ता जिस ढंग से टली है, उससे पता चलता है कि दोनों देशों ने अपूर्व कूटनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया है। न तो भारत ने अपना ठीकरा पाकिस्तान के सिर फोड़ा है और न ही पाकिस्तान ने भारत के सिर ! दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के बीच निश्चय ही संवाद हुआ है और दोनों ने मिलकर यह संयुक्त फैसला किया है। जरा हम याद करें, पिछले उन दोनों मौकों को जब वार्ताएं टूटी थी। एक हूर्रियत के बहाने और दूसरी कश्मीर के बहाने। दोनों सरकारों एक दूसरे के सिर पर छप्पर रखने की कोशिश की थी। दोनों सरकारें अपने-अपने अतिवादियों के दबाव में थीं। दोनों में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे अपने अतिवादियों का मुंह बंद कर सकें, लेकिन २५ दिसम्बर की नरेन्द्र मोदी की लाहौर यात्रा ने ऐसा चमत्कारी माहौल पैदा कर दिया है कि दोनों सरकारों में अपने पांवों पर खड़े रहने का दम आ गया है।

यही वजह है कि मोदी ने अपने ५६ इंच के सीने में ज्यादा हवा नहीं भरने दी। उन्होने विरोधियों के व्यंग्य-बाणों को अपनी चुप्पी के कवच पर झेला। वे बोले जरुर, लेकिन नवाज शरीफ से। यदि वे पहले की तरह पठानकोट हमले पर उग्र प्रतिक्रिया करते तो उसके दो बुरे असर पड़ते। एक तो पाकिस्तान सरकार हमेशा की तरह पलटवार करती और दूसरा, भारत की जनता पूछती कि अब सिर्फ बातें ही बनाते रहते हैं या कुछ करके भी दिखाएंगे ? मोदी के संयम ने उनके विरोधियों और पाकिस्तान, दोनों को काबू कर लिया। मोदी के गंभीर और शांत रवैये ने सबसे ज्यादा मदद की शरीफ की। ऐसा पहली बार हुआ है कि पाकिस्तान की फौज ने अपने नेताओं की बात को तरजीह दी है। सेनापति राहील शरीफ ने नवाज शरीफ के साथ मिलकर कदम उठाया है, इसीलिए यह भी पहली बार हुआ है कि किसी आतंकी घटना की जिम्मेदारी पाकिस्तान ने ली है। वरना हमेशा पाकिस्तान कह देता है कि यह आतंकी वारदात भी भारत ने ही प्रायोजित की है ताकि वह पाकिस्तान को बदनाम कर सके। इस बार, दोनों शरीफों ने काफी शराफत का परिचय दिया है।

इस शराफत के पीछे अमेरिकी दबाव तो है ही। राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने मुख्य भाषण में पाकिस्तान का नाम लेकर कहा है कि वह अंतराष्ट्रीय आतंक का गढ़ बन रहा है। इसके अलावा विदेश मंत्री जॉन केरी ने भी नवाज शरीफ पर बार-बार जोर डाला है कि वे पठानकोट कांड के षड़यंत्रकारियों को पकड़े। इसी बीच सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि अमेरिकी संसद (कांग्रेस) ने पाकिस्तान को दिए जाने वाले एफ-१६ लड़ाकू हवाई जहाजों के बारे में पुनर्विचार शुरु कर दिया है। इससे भी ज्यादा नवाज शरीफ के हाथ इस बात से भी मजबूत हुए हैं कि पाकिस्तान के कई कूटनीतिज्ञों, राजनीतिक विश्लेषकों और कुछ प्रबुद्ध पत्रकारों ने बड़ी हिम्मत दिखाई और अपनी सरकार से मांग की कि वह पठानकोट के आतंकियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करे।

पाकिस्तान के आम लोग भी अपने ही आतंकियों से बेहद तंग आ गए हैं। डेढ़ साल पहले फौज ने आतंकियों के खिलाफ जो जंगी अभियान चलाया था, उसमें उसने लगभग १० हजार आतंकियों का सफाया कर दिया था। अब ऐसा लग रहा है कि पाकिस्तान आतंकियों और आतंकियों में फर्क करना बंद करना लगा है। पहले माना जाता था कि जो आतंकी हिन्दुस्तान पर हमला करें, वे अच्छे हैं और जो पाकिस्तान में ही हमला करते हैं, वे बुरे हैं। किन्तु पिछले पांच-छह साल के तजुर्बे ने पाकिस्तान को यह सबक सिखा दिया है कि भारत के मुकाबले उसे ज्यादा चोट पहुंची

है। पाकिस्तान में ज्यादा लोग मरे हैं। पेशावर के सैनिक स्कूल के १५० बच्चों की मौत ने जनता का दिल दहला दिया था। यदि पाकिस्तान की सरकार और फौज अपनी जनता की इस भावना की कद्र करके अपनी सोच बदल रहे हैं तो भारत ही नहीं, दुनिया के सारे देश उसका स्वागत करेंगे। पाकिस्तान जो एक गुंडा राज्य (रोग स्टेट) के नाम से सारी दुनिया में कुख्यात हो चुका है, अब इस कलंक को अपने माथे से हटाएगा। हालांकि, असली प्रश्न यह है कि पाकिस्तान फिलहाल दिखावा कर रहा है या सचमुच उसका हृदय परिवर्तन हो रहा है ? भारत सरकार भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं है। जहां तक शरीफ का प्रश्न है वे तो निश्चय ही भारत से मधुर संबंध बनाना चाहते हैं। वे मूलतः व्यापारी हैं, इसलिए व्यावहारिक है और अमनपसंद है। किन्तु पिछले ७० साल से भारत के खिलाफ पाकिस्तान में जैसा विषैला प्रचार हो रहा है, अब उसका उल्टा पहिया घुमाना आसान नहीं है। नवाज शरीफ पाकिस्तानी पंजाब के हैं। पंजाब के सारे प्रांतों से बड़ा है और पंजाब में ही सबसे ज्यादा भारत विरोधी माहौल बना हुआ है। इसका फायदा उठाकर जेशे मुहम्मद के सरगना अजहर मसूद ने शरीफ को चुनौती दी है। पाकिस्तानी सरकार की हिम्मत नहीं पड़ रही है कि वह यह साफ-साफ कहे कि उसने मसूद को गिरफ्तार कर लिया है। यदि गिरफ्तार कर भी लिया तो क्या हुआ ? गिरफ्तार तो हाफिज सईद और लख्वी को भी किया गया था। इस नाजुक मुकाम पर यह अच्छा हुआ कि भारत ने अपनी तरफ से वार्ता भंग नहीं की। उसने पाकिस्तान की डोर लंबी कर दी है। देखें, पाकिस्तान अपनी नट-चाल कैसे चलता है ?

यह तो साफ है कि पाकिस्तान आज इस स्थिति में नहीं है कि आतंकवाद की कमर तोड़ सके। उसे पता है कि लाल मस्जिद पर हमला बोलकर मुशर्रफ ने कैसे अपनी गद्दी गंवाई थी, लेकिन वह आतंकवाद की एक टांग तो तोड़ सकता है। तब तक औपचारिक संवाद टल जाएं तो टल जाए। यदि अभी दोनों सचिव मिलते तो मोदी की बड़ी किरकिरी होती। यूं अभी अनौपचारिक संवाद तो कायम है ही और जोरों से हैं। दोनों प्रधानमंत्री, दोनों सुरक्षा सलाहकार, दोनों विदेश सचिव, दोनों देश के पत्रकार फोन और टीबी चैनलों पर जो कर रहे हैं वह संवाद नहीं तो क्या है ? जनरल मुशर्रफ और हमारे रक्षामंत्री और सेनापति जो बयान दे रहे हैं, उनसे भी घबराने की जरुरत नहीं है। वे दोनों देशों के पुराने घिसे-पिटे रवैयों की पुनरावृत्ति कर रहे हैं। दोनों देशों के आतंकवादियों के लिए वे चूसनियो (लॉलीपाप) की तरह हैं, लेकिन मियां नवाज शरीफ यदि सचमुच मोदी की शराफत को ससम्मान लौटाना चाहते हैं तो उन्हें भारत विरोधी आतंकियों के सारे अड्डों को तुरंत नष्ट करना चाहिए। उन्हें पता होना चाहिए कि आतंकी किसी के सगे नहीं होते। श्रीलंका के आतंकियों ने राजीव गांधी के साथ और अफगान आतंकियों ने जनरल जिया के साथ जो किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। मोदी और शरीफ के लिए पठानकोट हमला एक ऐसा ऐतिहासिक अवसर बन गया है, जो दोनों देशों की सत्तर साल पुरानी गांठों को खोल सकता है।

- नई दिल्ली

योग शिविर का आयोजन

आनन्दधाम उधमपुर में **दिनांक १७ अप्रैल २०१६ से २४ अप्रैल २०१६ तक योग शिविर** का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में महात्मा भगवानदेव चैतन्य, आचार्य संदीप आर्य व अन्य विद्वद्जनों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। १७ अप्रैल २०१६ को शाम ४ बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जावें। इच्छुक शिविरार्थी अपने पंजीकरण एवं विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

- भारत भूषण आनन्द मो. ९४१९१०७७८८

वैचारिक सोलह संस्कारों से ही मानव का नवनिर्माण सम्भव है

– डॉ. अशोक आर्य

ईश्वर ने सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही मनुष्य के सम्वर्धन के साधन बनाए, जिन्हें आगे चल कर प्राचीन ऋषियों ने नई दिशा देते हुए परमपिता परमात्मा के आदेशों पर चलने के लिए कुछ नियम बनाए। प्रभु की इच्छा थी मानव सदैव अच्छा ही देखे अच्छा ही सुने व अच्छा ही देखे। प्रभु ने अपनी वेदवाणी में अपने इस आदेश को इन शब्दों से अंकिता किया :

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

वेद के इस मन्त्र के माध्यम से प्रभु ने यह इच्छा व्यक्त की है कि हे मनुष्य ! तूं सदा अच्छा ही सुन, अच्छा ही बोल तथा सब और से अच्छा ही अच्छा प्राप्त कर। प्रभु की इस भावना को साकार करने के लिए ऋषियों ने मानव जीवन को सोलह संस्कारों से बांध दिया। महर्षि दयानन्द ने भी ऋषियों के इस आदेश पर चलने की प्रेरणा सोलह संस्कारों के माध्यम से दी है। इन सोलह संस्कारों के माध्यम से ईश्वर ने मनुष्य को बार-बार यह स्मरण दिलाया जाता है कि हे मनुष्य ! तूं ने अच्छा बनना है, तूं ने संसार को गति देनी है, तूने संसार का कल्याण करना है। इस कार्य की प्राप्ति के लिए जब तक तू स्वयं को अच्छा न बना लेगा, तब तक तेरे जीवन की सार्थकता नहीं है। यह उपलब्धि तुझे तभी प्राप्त होगी जब तूं अपने जीवन में सोलह संस्कारों को अपनाएगा। यह शब्द सोलह संस्कारों पर प्रकाश डालते हुए हरियाणा की मण्डी डबवाली से पधारे डॉ. अशोक अर्या ने कहे। यह केरल के नर कालीकट में कश्य वेद रिसर्च फाऊण्डेशन के एक विशाल समारोह में बोल रहे थे।

डॉ. आर्य ने आगे कहा कि मनुष्य के जीवन में सोलह संस्कार करने पर प्राचीन ऋषियों ने बल दिया है। इन सोलह संस्कारों में से तीन संस्कार मनुष्य के जन्म से पूर्व ही हो जाती हैं तथा शेष तेरह संस्कार जन्म के पश्चात होते हैं। जन्म से पूर्व होने वाले संस्कारों में गर्भाधान, पुंसवन संस्कार तथा सीमन्तोनयन संस्कार अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। यह वही काल है जिसमें गर्भ स्थिर होने के पश्चात् उसे बचाना व उसका विकास करना होता है। इस काल में गर्भस्थ बालक पर पड़ने वाले संस्कारों का दूरगामी प्रभाव पड़ता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महाभारत काल में अर्जुन बालक ने अपनी पत्नी को गर्भावस्था में जो कथाएं सुनाई, उनका व्यवहारिक ज्ञान उसके सुपुत्र अभिमन्यु ने इसी गर्भकाल में ही प्राप्त कर लिया, इसी के परिणाम स्वरूप ही वह चक्रव्यूह में जा घुसा। महान सम्राट नैपोलियन की माता भी गर्भकाल में युद्ध के भयानक चित्र देखा करती थी, जिनका प्रभाव गर्भस्थ नैपोलियन पर पड़ा तथा वह भी व्यावहारिक जीवन में उन चरित्रों का प्रतिरूप बन कर विश्व के सम्मुख आया। इस प्रकार गर्भकाल की घटनाओं का गर्भस्थ शिशु पर अवश्य ही प्रभाव पड़ता है। इसलिए ही हमारे ऋषियों ने इस काल को तीन संस्कारों से बांधकर गर्भस्थ शिशु को अच्छा बनने का उपदेश दिया है। जन्म होने के साथ ही जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, मुण्डन व कर्णवेध संस्कारों के माध्यम से बार-बार बालक को गन्दगी से निकालकर सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए उसे पुनः अच्छा सुनने, अच्छा देखने तथा सब कार्य व्यवहार अच्छे से करने की प्रेरणा व उपदेश दिया जाता है। इस समय तक बालक कुछ समझदार हो जाता है। यह कुछ कुछ अपना भला व बुरा भी समझने लगता है। अब बालक की शिक्षा का काल आता है। बालक को शिक्षार्थ गुरुकुल (वर्तमान में स्कूल) भेजने से पूर्व भी उसे कुछ उपदेश देने के लिए प्राचीन ऋषियों ने एक परम्परा आरम्भ की थी। इस परम्परा को भी ऋषियों ने एक संस्कार का नाम देते हुए इसे उपनयन संस्कार का नाम दिया गया है। इस संस्कार के अन्तर्गत बालक को तीन तारों वाला एक धागा पहनाया जाता है। इसके साथ ही पिता अपने बालक को बाइस प्रकार के उपदेश देता है।

उपदेशों में उसे बताया जाता है कि गुरुकुल में रहते हुए तू ने कैसा जीवन व्यतीत करना है, कैसा व्यवहार करना है, कैसे शिक्षा प्रापत करनी है तथा कौन कौन से व्रतों का पालन करना है। उपनयन संस्कार के पश्चात् बालक को गुरुकुल भेजा जाता है। यहां पर बालक का वेदारम्भ संस्कार किया जाता है। बालक का यज्ञोपवीत संस्कार कर, उसकी कमर में रस्सी डाली जाती है तथा हाथ में लाठी दी जाती है। आज से वह गुरु का अन्तःवासी बन जाता है। शिक्षा देने के साथ ही साथ गुरू वह सभी कर्त्तव्य में पूर्ण करात है जो घर पर माता व पिता करते हैं। वास्तव में यही व समय है, जिसमें बालक के वास्तविक भावी जीवन का निर्माण किया जाता है। इस काल में भी गुरु बार बार वह बात उसे याद दिलाता है कि तूने अच्छा बनना है, संसार का उपकार व कल्याण करना है। यहां से शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् इस ब्रम्हचारी को दीक्षान्त उपदेश दिया जाता है। इस उपदेश के अन्तर्गत गुरू बालक को बताता है कि मैंने जो तुझे सिखाना था वह सिखा दिया है। अभ तुछ में इतना योग्यता आ गई है कि तुने अपने भले बुरे का स्टीक ज्ञान हो गया है। तू जान गया है कि अपना भावी जीवन कैसे चलाना है तथा संसार का कल्याण कैसे करना है। अब तेरे में वह क्षमता भी आ गई है, जिससे तूं अपना भरण पोषण करने की स्थिति में तो आ ही गया है। इसके साथ ही साथ अपने माता-पिता व परिवार का भी आवश्यकताओं को भी पूरा कर सकता है तथा अब आश्रम वालों की देखरेख करने की शक्ति भी तेरे में आ गई है। इन सब का पालन करना तेरा कर्त्तव्य है। यह कहते हुए गुरु उसका समावर्तन संस्कार कर उसे घर भेजता है। जहां विवाह कर वह गृहस्थ संस्कार के माध्यम से सभी आश्रमों के पालक गृहस्थ आश्रण में प्रवेश करता है। जिस प्रकार माता-पिता ने उसका पालन किया था, ठीक उसी प्रकार इसके भी सन्तान होती है, जिसका वह पालन करता है तथा अन्य आश्रम वासियों का भी पालन करने के कर्त्तव्य का निर्वहन वह करता है।

डॉ. अशोक ने बताया कि इस आश्रम में प्रवेश के समय भी तथा इस में प्रवेश के पश्चात् भी समय समय पर होने वाले इस परिवार के अनेक संस्कारों के द्वारा भी उसके कानों में बार-बार यह शब्द आते हैं कि तूने अच्छे बनना है, संसार का उद्धार करते हुए कल्याण के कार्य करते रहना है। इस प्रकार के कर्त्तव्यों को पूर्ण करते हुए वह समय आ जाता है कि जब उसे पारिवारिक सेवाओं से मुक्त होकर पुनः शरीर को तपाने के लिए वाणप्रस्थ (वर्तमान रिटायर जिसका अर्थ है घिसे हुए टायर को पुनः तैयार करना) आश्रम में प्रवेश करना होता है तब तक मनुष्य स्वयं मेहनत कर समाज का आश्रित बना हुआ था। अब से उसने समाज के उत्थआन के उपाय करने के लिए अपने आप को तैयार करना होता है तथा अपना भरण पोषण का कार्य वह अन्यों पर छोड़ देता है। जब उसका शरीर खूब कठोर हो जाता है तो वह संन्यास की तैयारी करता है। इस संस्कार की दीक्षा देते हुए उसे एक बार फिर से वह स्मरण दिलाया जाता है कि तूने संसार का कल्याण करना है। फिर संन्यासी का जीवन तो होता ही परोपकार के लिए है। आज से उसका कोई घर नहीं होता। सम्पूर्ण जगत् ही उसका घर है। कोई उसका सम्बन्धी नहीं होता, जगत् के सभी प्राणी इसके कुटुम्ब के सदस्य होते हैं। वह सभी सम्बन्धों से ऊपर उठ जाता है। वह संसार के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए जहां भी कहीं जाता है, वहां के निवासियों को भी ऋषियों का सन्देश देता है कि हे मनुष्य ! तू ऐसे काम कर, जिससे तेरा भी कल्याण हो तथा संसार के अन्य प्राणियों का भी कल्याण हो। ऐसा करते हुए न जाने कब तथा कहां उसका देहान्त हो जाता था, इसका पता उसके परिजनों को भी नहीं मिलता था। यह वह कारण है कि हमारे पूर्वजों के जन्म दिन का तो सब को पता है। इन महापुरुषों के जन्म दिन तो हम प्रतिदिन मनाते हैं किन्तु मृत्यु दिवस नहीं सुनने में आते। केवल कुछेक महापुरुष ऐसे होते हैं, जिन्होने अपने जीवन में कुछ विशिष्ट काम किये होते हैं, जिस कारण उनके निर्माण दिवस का ज्ञान रह जाता है जिसे हम मनाते हैं।

डॉ. अशोक आर्य ने आगे बताया कि मनुष्य के सोलह संस्कारों में से जन्म पूर्व के तीन संस्कारों को छोड़ देवें तो शेष तेरह में से बारह संस्कार ऐसे हैं, जिन्हें करते समय मनुष्य पूर्ण जागरुक होता है। सोलहवां संस्कार उसका अन्तिम संस्कार होता है। संस्कारों में सोलहवां होने के कारण तो यह अन्तिम है ही, जीवन का भी यह अन्तिम संस्कार ही होता है। इस संस्कार के समय वह चाहे इस संसार में नहीं होता। आत्मा

शरीर को छोड़ चुका होता है। अब उसके परिजन अपने अपने ढंग से उसकी अन्तिम क्रिया सम्पन्न करते हैं। यह संस्कार करते हुए भी उसे सचेत किया जाता है कि तू ने अब किसी अन्य जन्म में जाना है, वहां जाकर भी तू अच्छे कार्य करना। आज संन्यास की परम्परा समाप्त सी ही हो गई है। इस कारण अपने बड़े लोगों की मृत्यु के दिन का हमें पता रहने लगा है, इस कारण इसे भी प्रतिवर्ष स्मृति दिवस के रूप में मनाकर उस दिवंगत के अच्छे कार्यों का स्मरण किया जाता है। इस प्रकार ऋषियों के बताए सोलह संस्कारों से तो मनुष्य को अच्छा बनने व अच्छे कार्य करने की प्रेरणा दी जाती है। किन्तु आज के सभ्य समाज ने नामकरण, विवाह तथा अन्तिम संस्कार (जो किसी न किसी रूप में मनाने ही पड़ते हैं) के अतिरिक्त अन्य सभी संस्कारों को भुला कर दुःख का मार्ग अपना लिया है। तो भी सूझवान मनुष्य ने इस अवस्था में भी अच्छा बनने की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए अनेक छोटे छोटे संस्कारों का विकास स्वयं ही कर लिया है। इन छोटे संस्कारों में जन्म दिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, दुकान, मकान अथवा शाला का शिलान्यास व उद्घाटन, मृत्यु दिवस, यात्रा पर जाने पर आदि ऐसे कई छोटे छोटे संस्कारों को अपनाना आरम्भ किया है। इन्हें अपनाते हुए इनको सोलह संस्कारों का स्थानापन्न कर लिया है। इन लघु संस्कारों के माध्यम से वह पुनः प्रभु की वेदवाणी पर चलते हुए इस मन्त्र को स्मरण करता है कि

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

प्रभु ने हमें जो सृष्टि की उत्पत्ति के साथ यह उपदेश दिया है कि हमें अच्छा बनना है, अच्छा देखना है, अच्छा बोलना है। हम अपने जीवन को इन शिक्षाओं के अनुरूप ही ढालेंगे तथा अपने साथ ही साथ संसार के सभी जीवों के जीवन का भी कल्याण करेंगे।

पता - आर्य सत्यवीर, ११६, मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरियाणा)

बोध कथा — गुरु जागना सिखाता है

एक गुरु था जो चौबीस घण्टे जगने की कला सिखाता था। एक बार घूमते-घूमते एक राजकुमार वहां पहुंचा और उसने भी यह कला सीखनी चाही। गुरु ने कहा - तुम्हें कुछ समय यहीं रुकना पड़ेगा और सारा दिन जागते रहना होगा। मैं देखता रहूंगा और अगर सोयेगा तो डण्डा लगाऊंगा। डण्डे के भय से राजकुमार जागता रहता यदि पलक झपकता तो डण्डा पड़ता। फिर एक दिन गुरु ने कहा - अब तू डण्डे का आदी हो गया है, पलक झपकने पर अब तलवार लगानी पड़ेगी। तलवार के भय से राजकुमार और ज्यादा सुजाग हो गया और उसकी पलक झपकनी बंद हो गई है। गुरु ने कहा अब तुमको रात को भी जागना है - सोया तो डण्डा पड़ेगा। राजकुमार सुजाग हो गया और जागने की कला सीख गया। गुरु ने तलवार उठाई तो भी सुजाग था।

गुरु ने उससे पूछा - तुम्हारी सुजागी में क्या फर्क हुआ? राजकुमार बोला, दिन में सुजाग रहा तो स्थूल के सम्बन्ध भूल गये। रात को जगा तो सूक्ष्म की स्वप्न सृष्टि खलास हुई और तलवार उठाई तो कारण भी गुम हो गया। गुरु हमेशा छुप के आता कि देखूँ यह सुजाग है या नहीं? एक दिन राजकुमार ने देखा गुरु पेड़ के नीचे आंखे बंद करके बैठा है। राजकुमार तलवार लेकर उस ओर बढ़ने लगा। गुरु ने दूर से ही कहा - मेरे को मत परख बच्चे! अब मेरी उम्र बड़ी हो गई है। राजकुमार शर्मिन्दा हो गया। गुरु ने राजकुमार से कहा वृक्ष के ऊपर चढ़ जाओ। जब चढ़ गया तो गुरु ने कहा, अभी उतर जाओ। राजकुमार सम्भल-सम्भल कर उतरने लगा। जब काफी नीचे आ गया तो गुरु ने कहा-सम्भलना। राजकुमार के मन में आया, जब ऊपर था तो गुरु ने कुछ न कहा अब दो ही सीढ़ी बची है तो क्यों कहता है। गुरु ने कहा, यह ही गिरने की सीढ़ी है जब अहंकार आ जाता है। राजकुमार गुरु चरणों में गिर गया।

सिद्धान्त : सच्चा गुरु पहरेदारी करके हमेशा आत्मा में जागना सिखाता है।

४ फरवरी : विश्व महिला दिवस

नारी संबंधी भ्रान्त चिन्तन को वैदिक लताड़

– श्रीमती सुकान्ती आर्या

आधी दुनिया

अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष, नारी मुक्ति आन्दोलन, नारी सशक्तीकरण आदि नानाविध विचार समय-समय पर पत्र-पत्रिका, दूरदर्शन आदि संचार माध्यमों द्वारा देखने सुनने को मिलते हैं, आज सोचने की आवश्यकता है क्या ये सब नारी की समस्याओं के स्थायी समाधान है। प्रत्येक क्षेत्र में नारी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे कदम बढ़ा रही है। उसे पुरुषों के बराबर बहुत सारे अधिकार भी दे दिये गये हैं किन्तु इन तमाम अधिकारों के बावजूद क्या नारियों के सम्बन्ध में समाज का चिन्तन परिवर्तन हुआ है। मुझे लगता है नहीं परम्परावादी दृष्टिकोण में स्त्रियों को स्कूल-कॉलेज जाने, बाहर नौकरी करने आदि की जो छूट मिली है, वह इस पुरुष प्रधान समाज के समझौता परस्ती का एक नमूना है।

आज लड़कियाँ इसलिए पढ़ायी जाती हैं ताकि विवाह में आसानी रहे, इसलिए नहीं कि नारी नामक जीव का सर्वांगीण विकास जरूरी है न इसलिए कि वह स्वतंत्र चिन्तन कर सके। नौकरी का उद्देश्य भी घर के खर्चे पूरे न हो सकने की मजबूरी मात्र है। नारियों के सम्बन्ध में पुरुष समाज आज भी बहुत कुछ दकियानूसी और पाखण्डी है।

यह एक कटु सत्य है कि विवाह से पहले मां-बाप और बाद में पति उसकी जिम्मेदारी के भार से दबे दुबले होते रहते हैं। वह कहाँ जाती है कैसे जाती है, किससे मिलती है यह उनकी परेशानी है। वे जानते हैं कि घर के बाहर उनकी बहू-बेटियाँ सुरक्षित नहीं है। क्यों नहीं जानेंगे ? वे खुद भी तो उसी पुरुष समाज का अंग है और दूसरों की बहु-बेटियों को उनसे यही खतरा होता है। पुरुष प्रधान यह समाज नारियों पर दया कर सकते हैं किन्तु उन्हें इन्सान नहीं मान सकते। इस प्रकार की नारियों की दशा के लिए उत्तरदायी है - पुरुष समाज की दोहरी मानसिकता और चरित्र की परिभाषा पति पिछले दरवाजे से कुछ भी करे उसे इसकी छूट हैं। परस्पर प्यार, सहयोग और समझदारी से साथ रहने वाले स्त्री चरित्रहीन है। और पति होकर पत्नी से जबरदस्ती करने वाले चरित्रवान् ! पवित्रता का बोझ सिर्फ स्त्रियों के लिए मानते हैं। पुरुष प्रधान इस समाज का यह दम्भ है कि हम बहुत आदर्शवादी हैं नारी की पूजा करते हैं उसे देवी मानते हैं पर व्यवहार में उसे एक वस्तु से अधिक कुछ भी नहीं समझते। लड़के के माँ बाप अपने सुपुत्र को ब्लैंक चेक समझते हैं जिसमें मनमानी राशि भरकर भुनाया जा सकता है। आई.ए.एस., वकील, व्यापारी, इंजीनियर, कैप्टन लड़का अपनी बोली लगाये बिना नहीं रहता। वह इसका विरोध भी नहीं करता क्योंकि दहेज से उसे अपने किसी लायक होने का अहसास होता है। यह भातीय नारी की बदकिस्मती है कि वह आत्म हत्या कर सकती है लेकिन बुराइयों से संघर्ष नहीं कर सकती। सीता धरती में समा सकती है लेकिन चैलेन्ज नहीं दे सकती। समाज द्वारा तैयार किये गये आदर्शों के फ्रेम में उसे फिट होना उसकी विवशता नहीं तो क्या है ? वैदिक दृष्टिकोण इससे सर्वथा भिन्न एवं व्यापक है। उसके अनुसार नारी के बिना यह विश्व अपूर्ण है सार शून्य है।

नारी की महत्ता के कारण ही वैदिक साहित्य में इसकी कामना और समुचित पालना प्रत्येक गृही से किये जाने का विधान है। इसी कारण इसका नाम कन्या है अर्थात् सबके द्वारा वाञ्छनीय रखा गया है। आचार्य यास्क ने अपने प्रसिद्ध निर्वचन शास्त्र निरुक्त में **कन्या कमनीया भवति** (निरुक्त ४-२) कह कर उसे कमुकान्तौ धातु से सिद्ध कर सबसे चाही जाने वाली कहा है। वैदिक पिता पुत्र और पुत्री में कोई भेद नहीं करता और दोनों को सुवर्णवत् मानता है। ऋग्वेद के एक मंत्रांश की व्याख्या में - भाष्यकार श्री शारदा जी ने उमाहिरण्यपेशरवा कहा। आगे ऋग्वेद के ६वें मण्डल में एक मन्त्र इस सम्बन्ध में आया। **ओ३म् बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चित्वा कृणोति समनावगत्य। इषुधिः सङ्का**

पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः । अर्थात् - वह अपने घर में अपनी अनेक पुत्रियों को खेलता कूदता तथा किलकारियाँ भरता देखकर प्रसन्नता का अनुभव करता है । वैदिक दृष्टि में समाज के अन्दर नारी की जरुरत और महत्व अत्यधिक है और कन्या की कामना सर्वदा स्वाभाविक व उपयुक्त है । वैदिक साहित्य के अनुसार -

"पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने ।
वार्धक्ये रक्षति पुत्र न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥

अर्थात् - नारी को कुमारावस्था में पिता सब प्रकार की सुरक्षा करता है । युवावस्था में पति की जिम्मेदारी सारी व्यवस्था पर रहती है । ढलती उम्र में पुत्र सम्पूर्ण देखभाल करता है । इस तरह नारी को कभी आर्थिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता वह पति घर में **'साम्राज्ञीश्वशुरे भव'** के वैदिक उद्घोषानुसार वह घर की मालकीन स्वतः सिद्ध है । **पुराकल्पे तु नारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते** ।। आदि स्मृति प्रमाणानुसार नारी शिक्षा की घोषणा वैदिक साहित्य खुलकर करते हैं । **यथेमां वाचं कल्याणी मावदानीजनेभ्यः** आदि यजुर्वेद के प्रमाणानुसार समान शिक्षा की वकालत है । अपाला घोषा लोपामुद्रा आदि वैदिक विदुषी प्रसिद्ध है । बिना उचित शिक्षा के यह सब कैसे सम्भव है नारी शिक्षा विरोधी चिन्तन करें ।

सच तो यह है , पुरुष बाहुल्य समाज ने नारी के वास्तविक महत्व को समझने का प्रयास ही नहीं किया । अन्यथा दकियानुसी विचारों के लिए स्थान ही नहीं होता । इसलिए यह जरुरत आज है कि नारी स्वयं जाग्रत हों । यह निश्चित है कि वज्र सा कठोर पुरुष नवनीत सी कोमल नारी के बिना सर्वथा एकांगी है । स्त्री को अपनी शक्ति को पहचानना होगा । यदि माताएँ अपनी पुत्री को योग्य व शिक्षित करने में श्रम करें तो वर पक्ष वाले स्वयं उनके दरवाजे पर चक्कर लगाते ही रखेंगे। मानव जाति का सम्पूर्ण उत्कर्ष नारी जाति की समुचित उन्नति में सन्निहित है । अतः आज समय की मांग है कि नारी को उसके किसी भी मूलाधिकार से वंचित न कर उसके सर्वाङ्गीण विकास हेतु नये सिरे से समाज के कर्णधारों को चिन्तन करना चाहिए । तभी हम एक स्वस्थ खुशहाल एवं समृद्ध भारत की परिकल्पना साकार कर सकेंगे ।

पता - नन्दिनी भिलाई (छ.ग.)

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥

महापुरुष लक्षण

अनिन्दा परकृत्येषु स्वधर्मपरिपालनम् । कृपणेषु दयालुत्वं सर्वत्र मधुरा गिरः ॥
प्राणैरप्युपकारित्वं मित्रायाव्यभिचारिणे । गृहागते परिष्वङ्ग शक्त्या दानं सहिष्णुता ॥
स्वसमृद्धिष्वनुत्सेकः परबुद्धिष्वमत्सरः । नान्योपतापि वचनं मौनव्रतचरिष्णुना ॥
बन्धुभिर्बद्धसंयोगः सुजने चतुरश्रता । तच्चित्तानुविधायित्वमिति वृत्तं महात्मनाम् ॥

दूसरे के कार्य की अनिन्दा, स्वधर्म का परिपालन, कृपण जनों पर दयालुता, सर्वत्र मधुर भाषण, अच्छे मित्र का प्राणपण से उपकार, घर आने पर आलिंगन तथा यथाशक्ति समय पर देना, सहिष्णुता, अपनी समृद्धि का गर्व न करना, दूसरे की बढ़ती देख ईर्ष्या न करना, दूसरे को ताप देने वाला वचन न कहना, मितभाषिता, बन्धु-बान्धुवो के साथ अच्छा सम्बन्ध रखना, सज्जनों के साथ मैत्री करना और श्रेष्ठ लोगों के परामर्श लेकर कार्य करना - ये महापुरुषों के लक्षण हैं ।

- कामन्दकीयनीतिसार (३/३४/३७)

गवेषणात्मक

गृह्यसूत्रों की उपादेयता ?

- उदयन आचार्य

वेदों की पठन-पाठन परम्परा का निर्वहन करने के लिये गृह्यसूत्रों की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। गृह्य का अर्थ गृहस्थ से संबंधित है अर्थात् गृहस्थ में क्या कर्म करणीय है ? क्या अकरणीय है ? इन सबका विशेष रुप से दिग्दर्शन किया गया है। परन्तु हमें इन्हीं गृह्यसूत्रों का विशेष अध्ययन करने पर कभी-कभी वेद विरुद्ध बातें भी देखने को मिलती है। इसके समाधान में शोधार्थी यही कहना चाहेगा कि गृह्यसूत्र में हर बात को प्रमाण रुप में स्वीकार्य नहीं करना चाहिए। मेरे द्वारा अध्ययन किये जाने पर ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रों में कहीं-कहीं पर गृह्यसूत्रकार तत्कालीन परम्परा का केवल मात्र वर्णन करते हैं तथा कहीं-कहीं अन्य आचार्यों के मतों का भी वर्णन करते हैं। जैसे ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र में वपा शब्द का प्रयोग मिलता है।

व्याख्यानकारों ने यहां वपा शब्द का अर्थ पशु की चर्बी से किया है। पशु की चर्बी को अग्नि में आहुति करने से वायु, जल और वातावरण में जो प्रदूषण होगा वह यज्ञीय नहीं हो सकता। परन्तु **'वाहवपाम् जातवेदा'** इस मन्त्र को समझना जरुरी है। बिना देवता के मन्त्र का अर्थ तर्कसंगत नहीं हो सकता। क्योंकि देवता वर्ण्यविषय होता है। इस मन्त्र का देवता 'जातवेदा' है। इसका अर्थ हुआ जातानि यो वेद अथवा **जातानि व एनं विदुः** निरुक्तकार की इस व्याख्या के अनुसार ज्ञानी व्यक्ति जातवेदा है। इसके लिए वपा के वहन का निवेदन वेद मन्त्र में किया गया है।

वैदिक पद यौगिक होते हैं। वपा शब्द पाणिनि व्याकरण के अनुसार डुवप् बीज सन्ताने धातु से बनता है तो उप्यते या यया यस्यां वा सा वपा इस दृष्टिकोण से अन्न अथवा खेत का नाम वपा है। अतः इस मन्त्र में वपा शब्द से अन्न का ही ग्रहण करना उचित है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र में वपा शब्द का अर्थ भूमि से किया है। जो कि व्याकरण और निरुक्त वेदांगों के अनुकूल है। यज्ञीय पवित्र कर्मकाण्ड के भी अनुकूल है। अतः यहां वपा शब्द का अर्थ चर्बी करना कथमपि उचित नहीं हो सकता। आर्य गृह्यसूत्रों में आश्वलायन, सांख्यायन, कौषितकी आते हैं। ध्यातव्य है कि तत्कालीन परम्परा में वपा शब्द का अर्थ चर्बी से किया गया है और बहुधा गृह्यसूत्रकार चर्बी अर्थ ही स्वीकार करते हैं। मेरा मानना है कि सूत्रकार केवल मात्र तत्कालीन परम्परा का निर्देशन करते हैं न कि प्रमाणित। जैसे अन्य उदाहरण गृह्यसूत्रों में वर्णित है।

जो श्राद्ध की पद्धति है उस पद्धति में कौन-सी पद्धति क्यों की जा रही है। जैसे जल पात्र में तिल डालकर ब्राह्मणों के हाथ में देना। उस जल को ब्राह्मण क्या करेंगे ? ऐसा कुछ भी उल्लेख नहीं है। गृह्यसूत्रों में कहा गया है कि ब्राह्मणों के कर लेने पर पिण्ड दान करें। प्रश्न है कि पिण्ड क्या है ? किस चीज से निर्मित है ? पिण्ड का उद्देश्य क्या है ? शास्त्रीय परम्परा में पिण्ड शरीर का नाम है। **'यथा पिण्डे तथा ब्राह्मण्डे'** अपने पितरों के आज्ञा में अपने पिण्डों को **मनसा, वाचा, कर्मणा** समर्पित कर देना ही वस्तुतः पिण्ड दान है परन्तु यहां इस प्रकार का कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया है। इसी प्रसंग में आगे लिखते हैं कि पिण्ड से अवशिष्ट अन्न को ब्राह्मणों को ही दे देना चाहिए। इस वर्णन से सिद्ध होता है कि सूत्रकार पिण्ड का मतलब अन्न से बना हुआ पिण्ड ऐसा करते हैं।

अब पुनः प्रश्न होता है कि जब पूर्ण भोजन हो चुका हो तब उन पिण्डो को ब्राह्मण कैसे खायेंगे ? पिण्ड भी ३, ५ या ७ है तो भोजन से तृप्त ब्राह्मण इन पिण्डों को किस उदर में सेवन करेंगे। इत्यादि उदाहरणों से प्रतीत होता है कि गृह्यसूत्रकार ना तो अपने मन्तव्य का वर्णन कर रहे हैं। अपितु तत्कालीन समाज के परम्पराओं का केवल मात्र वर्णन कर रहे हैं। इसी कारण से बहुत सारी अन्ध परम्पराओं का वर्तमान में भी प्रचलन है और यह सब कहीं न कहीं गृह्यसूत्रों का परिणाम है। अतः गृह्यसूत्रों के अध्ययन करते समय विशेष अवधान देना चाहिए तथा हर बात वेदानुकूल ही होनी चाहिए।

क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण है तथा अन्य ग्रन्थों को वेद के प्रमाण की आवश्यकता पड़ती है।

यदि कोई ग्रंथ वेदानुकूल है तो स्वीकरणीय है अन्यथा स्वीकरणीय नहीं है। जिन महानुभावों को इस प्रकार के लेखों पर आपत्ति होती है उन्हें एक बार अवश्य ही गृह्यसूत्रों को पढ़ लेना चाहिए और अध्ययन करते समय पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि गृह्यसूत्र उपयोगी नहीं है परन्तु इनमें अच्छे प्रसंगों का भी वर्णन मिलता है। जैसे - यज्ञकर्म के समापन पर ब्राह्मणों को भोजन भी अवश्य कराना चाहिए। इस प्रसंग में लिखते हैं कि ब्राह्मण वाणी रुप वय श्रुत, शील और चरित्र इन गुणों से युक्त होना चाहिए। शाङ्खायन कहते हैं कि इन सब गुणों में भी श्रुत गुण सर्वातिशायी है। इस गुण का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। यहां अत्यन्त स्पष्ट है कि वेद विद्या विद् चरित्र से अतिनिर्मल सुन्दर शीलवान् ब्राह्मणपद वाच्य है ब्राह्मणत्व में जन्म कारण नहीं है। वर्तमानकाल में जाति व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न अनधीत व्यक्ति भी जिस तरह से ब्राह्मण पद वाच्य है।

यह शाङ्खायन को स्वीकार नहीं है। जाति व्यवस्था के कारण ब्राह्मणत्व प्राप्त व्यक्ति सामाजिक सौजन्य के कारण नहीं बन सकते। अतः वेद विद् ब्राह्मण ही भोज्य सत्कारी है। इस प्रकार से अन्य उदाहरणों का दिग्दर्शन गृह सूत्र कार वेद विद् को ही ब्राह्मण संज्ञा देते हैं। परन्तु वर्तमान में जिस तरह से जाति व्यवस्था का स्वरुप दिखाई देते हैं। वह कहां तक उचित है ? ऋग्वेदीय गृह्य सूत्रों में विभिन्न प्रकार के करणीय और अकरणीय कर्मों का निदर्शन मिलता है।

पता : प्राचार्य, गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय,
गुरुकुल करतारपुर, जालन्धर (पंजाब) १४४८०१

कविता

ऐसा काम न करना

हंसना और हंसाना अपना
जीवन का आदर्श हो
देश हित पर मिटे हम
चाहे जितना संघर्ष हो।

दीन-दुखियों की करें सेवा
मानवता का कल्याण करें
उच्च आदर्शों पर चलें सदा
राष्ट्र का उत्थान करें।

ऐसा काम कभी न करना
पर का जिससे मान घटे
महापुरुषों की वाणी से
कभी न हमारा ध्यान हटे।

बुरी आदतों को न अपनाएँ
सदा जगत में आदर पाएं
बुजुर्गों की सेवा करके
उनका स्नेह संबल पाए।

नया सूरज उगाएंगे

हम नन्हे-मुन्ने हैं पर
भारत की शान बढ़ायेंगे
नहीं रूकेंगे, नहीं झुकेंगे
आगे बढ़ते जाएंगे।

रुका हुआ पानी दरिया का
बदबू ही फैलाता है
मंजिल कभी नहीं पा सकता
जो बैठा ही रह जाता है।

भारत मां है जननी अपनी
हम मिलकर इसे सजाएंगे
आपा-धापी छोड़ें हम सब
प्रेम के दीप जलाएंगे।

हम नन्हे-मुन्ने हैं पर
भारत की शान बढ़ायेंगे
इन नन्हें-नन्हें हाथों से
एक नया सूरज उगाएंगे।

रचयिता : राजकुमार जैन 'राजन', चित्रा प्रकाशन, आकोला-३१२२०५ (चित्तौड़गढ़) राज.

सामाजिक

"वैराग्य"

– देवेन्द्र कुमार मिश्रा

अच्छी खासी जिन्दगी चल रही थी। घर-परिवार, पत्नी-बच्चे, माता-पिता, भाई-बहिन, रिश्तेदारों, काम धंधे के मध्य जीवन अपनी गति से मस्ती में, परेशानियों में गुजर रा था, यही जीवन है ऐसा ही चलता है। कभी दोस्तों में कभी मनोरंजन के साथ कभी मायूसी में, कभी मौज में चलता है जीवन। कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी सुख, कभी दुख, कभी असफलता जीवन के यही ढंग है। आदमी जूझता है जीता है। लेकिन रघुपति के जीवन में अचानक कहो या धीरे-धीरे वैराग्य भाव अने लगा। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म, दान-दक्षिणा, जप-यज्ञ, उपवास व्रत तो वे पहले भी करते थे। करते थे और जीवन के कामों में जाते थे। ऐसा वैराग्य भाव कहीं नहीं आया कि सब छोड़कर ईश्वर की खोज में निकल पड़े। वे वैराग्य भाव मीडिया के साधक-संतों, कथा वाचकों की देन है या खरपतवार की तरह बढ़ते मठो-आश्रमों में साधुओं के प्रवचन का असर है जो सुबह उठते टी.वी. चलाते है ही ब्रह्म, मोक्ष, निर्वाण और जीवन की नश्वरता पर बोलते रहते हैं। सब रिश्ते माया-मोह है। मोह के बंधनों को काट डालो और साक्षात्कार करो ईश्वर का। ईश्वर के अलावा जो कुछ भी है। सब व्यर्थ है तो व्यर्थ के चक्करों में क्या पड़े।

व्यर्थ है माता-पिता, पत्नी, बच्चे, काम, धंधा, यार-दोस्त जीवन के रंग। शायद रघुपति मेहता को संन्यास की ओर प्रेरित करने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण थी। रघुपति ने अपने परिवार को अपने सम्पर्क के सभी लोगों को सबको घर गृहस्थी छोड़कर सन्यास की बात कही तो माँ रोई बीबी उदास हो गई। दोस्तों ने सोचा कोई घरेलू समस्या होगी। रिश्तेदार पहुंचे। बाप ने समझाया। बच्चों ने सोचा बुढ़ऊ सरक गया है। अब जो भी हो। धर्म एक नशे की तरह है। नशा चढ़ गया सो चढ़ गया। जब बेहोशी टूटेगी तब टूटेगी। किसी के रोकने समझाने से वैराग्य किसी हठी बालक की तरह और प्रबल होता है। घरवालों ने सोचा ऐसे अनमने ढंग से जी रहा है। इससे अच्छा है कि इसे मन की कर लेनी दी जाये। घर में सब है खेती-बाड़ी सम्पन्नता। बच्चे बड़े हैं। काम धंधा संभाल ही लेंगे। पत्नी ने उदास होकर पूछा - "मुझसे नाराज हो", पति ने अपने वैरागी ढंग से समझाया "काम हो गया। अर्थ हो गया। अब जीवन को धर्म और मोक्ष भी आवश्यक है। अन्यथा मनुष्य और पशु के जीवन में क्या अन्तर है। तुम चाहो तो मेरे साथ चलो।"

पत्नी ने कहा "ना बाबा ना मैं अपने बच्चों के साथ खुश हूँ। मुझे नहीं चाहिए वैराग्य। मेरा तो सबकुछ यहीं है। आपकी वापसी का इंतजार करूंगी।" पति समझ गया और मुस्कराकर बोला- "मूरख संसारी स्त्री। माया मोह में जकड़ी" और रघुपति मेहता ईश्वर की खोज में घर से निकल पड़े। उन्हें पता था कि ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को एक गुरु की आवश्यकता होती है जो मार्गदर्शन करता है। ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता बताता है। भले ही संसारी लोग गुरु की महत्ता को अस्वीकार कर दें किन्तु सभी धर्म-ग्रंथ एक स्वर में स्वीकार करते हैं कि **गुरु बिन भव निधि तरे न कोई जो विरंचि शंकर सम होई।** कबीरदास जी जैसे निर्गुण उपासक ने कहा कि **गुरु गोविन्द दोऊ खड़े। काकेलागू पाये। बलिहारी गुरु आपकी जो गोविन्द दिये बताय।** अब गुरु की खोज शुरु हुई। शुरुआत उन्होने आश्रमों, मठों, संस्थाओं से की जिनके उन्होने पुस्तकों में पढ़ा चैनलों पर देखा। लेकिन यहां तो रहने, खाने, सीखने सभी की फीस तय थी। अपना अढच उरीव साथ लेकर निकले थे तो रहकर उन्होंने जो बताया गया सीखा। उपवास, ध्यान, प्राणायाम। किन्तु उन्हें शांति नहीं मिली। आश्रमों का माहौल उन्हें बाजा जैसा लगा। बस पैसे का बोलबाला। पैसा भी खर्च करो। मुफ्त सेवा भी करो। ढेर भर के नियम कायद्धक अलग संस्था आश्रम का प्रचार प्रसार करो। किताबें बेचो। सामग्री बेचो, दवायें, माला, गौमूत्र आयुर्वेद की सामग्रियाँ बेचो। ये तो वे लोग कर रहे थे शिष्य बनकर जो बेकार थे, कुंवारे थे जिनका कोई नहीं था या जिनको नकारा समझकर घरवालों ने भगा

दिया था। वे आगे बढ़ते गये। कभी बनारस कभी हरिद्वार, कभी गंगा के घाट पर किन्तु यहां पर धर्म कर्म के कर्मकांड ही थे जो वे घर पर रत रहते थे। बात-बात में दक्षिणा, चंदा की डिमांड थी। कुछ ऐसे आश्रम थे जिनका ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं था, वे बस राजनैतिक संगठन जैसे थे। भटकते-भटकते वे हिमालय की ओर निकल गये। यहां भी कई आश्रम थे।

इन आश्रमों में छोटे बच्चों से लेकर युवा सन्यासी थे। सिर मुंडाये, त्रिपुण्ड लगाये, भगवा भेष में ओंकार का स्वर गूंज रहा है। वे कुछ दिन आश्रम में रहे। अपने भोजन और रहने का प्रबन्ध उन्होने अपने व्यय पर किया। आश्रम आते-जाते उनका सम्पर्क अच्छा हो गया था। उन्होने एक बच्चे से पूछा - "क्या तुम्हें ईश्वर मिला।"

बच्चा उदास होकर बोला मेरे पिता छोड़कर चले गये। मेरी माँ मर गई है। पिता ने दूसरी शादी कर ली और मुझे गुरुजी के सुपुर्द कर दिया। मुझे तो मेरी माँ की याद आती है। यहाँ खेलने को भी नहीं मिलता। गुरुजी कहते हैं वही ईश्वर है ऐसा जानकर सेवा करो। मुझे न गुरु चाहिए न ईश्वर। मुझे तो माँ चाहिए।

रघुपति मेहता को झटका लगा। एक युवा सन्यासी से पूछा - "जवानी की उम्र में सन्यास। ईश्वर के प्रति इतनी प्यास इतना प्रेम।"

वो तो है ही लेकिन मेहता जी आप तो शादीशुदा है। ग्रंथ कहते हैं नारी नरक का द्वार है, नारी माया है। कैसी होती है स्त्री ? देखने की महसूस करने की बड़ी इच्छा है। ऊपर से राम-राम करता हूँ किन्तु अन्दर स्त्री घूमती है। किसी से कहना मत। गुरुजी से बातचीत भी होती रहती। गुरुजी की उम्र पचास वर्ष के लगभग। हट्टा-कट्टा शरीर। लम्बी जटा जूट, रुद्राक्ष की ढेर सारी गले में लटकती मालायें। बातचीत से पता चला कि पिछले २० वर्षों से यहां रह रहे हैं अपनी क्षमता अपने बल अपनी बुद्धि की सामर्थ्य पर वे इस मठ के अधिपति बने हैं। उन्हें चारों वेद, पुराण, उपनिषद कंठस्थ है। भरी जवानी में उन्हें पता चला कि उनकी पत्नी के किसी अन्य पुरुष के साथ अवैध संबंध थे। वे गुस्से में पत्नी की बेवफाई से पीड़ित होकर इस मोक्षगामी राह पर निकल पड़े। अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए तो अन्य माध्यम है कृत्रिम भी अकृत्रिम भी। लेकिन अपनी पत्नी की बेवफाई को याद करते हुये आज भी उनकी आंखें गुस्से से लाल हो जाती है। संसार यहां भी चल रहा है। वे और आगे बढ़ते गये। कोई रामायण-पाठ करके गुरु बने हुए हैं कोई भागवत कथा सुना रहे हैं। कोई वेद उपनिषद की बातें कर रहे हैं अच्छी खासी दर्शक दीर्घा भी हैं इनके पास। लोग पैर पड़ते हैं। दान-दक्षिणा देते हैं लेकिन ये सब तो घर पर भी कर लेते थे। उन्हें तो तलाश थी ऐसे गुरु की जो मोक्ष की राह बता सके। वे आगे बढ़े और देखते रहे आश्रमों को, धार्मिक संस्थाओं को। लेकिन उन्हें कुछ जमा नहीं। वे बड़े-बड़े श्री श्री १०८ से लेकर १००८ तक उपाधि से भूषित सन्यासी, पंडित, ज्ञानियों से मिले। कुछ ऐसे भी मिले जो बम भोले कहकर दिन रात गांजे के नशे में चूर रहते हैं सुट्टा मारकर। यही उनका अध्यात्म है कि लगाओ कश और पड़े रहो।

कुछ बड़ी ही मनमोहक व्याख्या करते हैं धर्म ग्रन्थों की। ज्ञान की, ध्यान की, वैराग्य की। लेकिन उनकी कथनी करनी में अन्तर स्पष्ट दिखता है। उन्होने ऐसे ही किसी आश्रम में एक व्यक्ति का नाम सुना। जिसके पास वे गये। इस व्यक्ति के पास न तो आश्रम था न चेले न कोई दर्शक न ही कोई पोथी-पंडे। हाँ, एक झोपड़ा था, जिसमें अकेला रहकर ये व्यक्ति राम-राम जपता था लेकिन झोपड़े में किसी देवी-देवता की कोई तस्वीर भी नहीं थी। वह धोती-कुर्ता पहनता था। इस व्यक्ति के पास एक जोड़ी फटे कपड़े थे। जिसे पहनकर भिक्षा मांगता था। अपना खुद बनाता पकाता खाता और पड़ा रहता। उम्र होगी कोई ७० वर्ष। रघुपति मेहता जी ने पैर पड़े उन्होने आशीर्वाद दिया और पूछा - "यहाँ कैसे ?"

"ईश्वर की खोज में"

यह आदमी बहुत जोरो से हंसा। रघुपति को आश्चर्य हुआ कि उसकी बात पर हंस क्यों रहा है। उन्होने कारण पूछा। तो उसने कहा - "तुम्हारा प्रश्न ही बेवकूफाना है। हंसी तो आयेगी ही।"

"तो आप ही कोई राह बताइये। मैं आपकी शरण में हूँ," रघुपति मेहता ने समर्पित भाव से कहा।

"वह ७० वर्ष का बूढ़ा फिर हंसा। हंसते हुये उसने कहा।"

"आओ बैठते हैं। मुझे लोग बाबाजी कहते हैं। बताओ क्या हलचल है अन्दर"

"बाबा जी मोक्ष, ईश्वर दर्शन की प्यास है।"

"तो भटक क्यों रहे हो धर्म के बाजारों मे"

"आप ही बताईये कुछ। ये आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? दर्शन क्या है, अष्टांग योग क्या है ? निर्वाण समाधि क्या है ?"

"इसके लिए तो बाजार से किताबें खरीद लेते हैं। सब जानकारियाँ मिल जाती।"

"लेकिन बाबाजी किताबों से ईश्वर तो नहीं मिलता"

"ये कैसे समझ लिया तुमने कि आश्रमों पहाड़ों, हिमालय में ईश्वर मिल जाता है। हाँ यहां शोरगुल नहीं है। सो एकान्त और शांति मिलना स्वाभाविक है लेकिन ईश्वर यहां छिपकर थोड़े ही बैठा है जो तुम यहां खोजने आ गये"

"मैं दुविधा में हूँ"

"जहां हो वही कर्म करो ईमानदारी से। कुछ समय जनकल्याण के लिये निकालो। क्या मासूम बच्चों की मुस्कराहट में ईश्वर नहीं दिखा तुम्हें। पत्नी की दिन-रात की सेवा में ईश्वर नहीं दिखा तुम्हें।"

"लेकिन बाबाजी यदि इसी में ईश्वर दिखता है तो आप यहां क्यों ?"

"मेरा कोई नहीं था। मैं किशोर अवस्था में ही भटकता रहा किसी गुरु की तलाश में। कई आश्रमों की सेवा की। कई गुरुओं के साथ रहा। वर्षों गीता, रामायण पढ़ता रहा। और अन्त में पाया कि निष्काम भाव से जो करो वही पूजा है। चलो मान लो कि ईश्वर ने किसी साकार रुप में मुझे दर्शन दे दिये तो उससे भी क्या ? वे दर्शन देकर चले गये। जीवन तो हमें ही जीना है। मैं यहाँ ऊँचाई पर झोपड़ी बनाकर रहने लगा। मन में संतोष भाव था धर्म का बाजार नहीं लगाया। नीचे जाकर भिक्षा मांगता हूँ । अपने लिये पका लेता हूँ। राम-राम जपता हूँ। अब एकान्त ही भाता है।"

"तो मोक्ष, निर्वाण, सद्गति का क्या ?"

"ये किताबी और अव्यवहारिक बातें हैं। गीता पढ़ो और समझो। ज्यादा नहीं बस इतना कि निष्काम भाव से कर्म करो। किसी से अपेक्षा मत रखो। इतना किसी में मन मत लगाओ कि उसके छोड़ने, त्यागने, न रहने पर मन को दुख पहुंचे। चाहे वो धन हो, स्त्री हो या संसार के अन्य पदार्थ"

"तो मैं क्या करूँ"

"अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रहो। खुशियाँ बांटो। किसी पर बोझ मत बनो। सबके सुख-दुख में काम आओ। सबमें ईश्वर देखो। सबको सम्मान दो।"

"और ज्ञान, वैराग्य, मोक्ष, ईश्वर"

"इन लुभावनी बातों में शब्दों के जाल में क्यों उलझते हो। जिस संसार में जिस घर में तुम रहते हो। वहां भी वही ईश्वर है जो इस पहाड़, जंगल में। संसार ईश्वर का बनाई हुई ही है। ईश्वर ने तुम्हें पत्नी-बच्चे, माता-पिता सब दिये। काम धंधा, मकान, व्यापार सब है तुम्हारे पास और तुम हो कि बिना मांगे ईश्वर का इतना सब दिया हुआ छोड़कर आ गये"

"तो मेरे लिए क्या आदेश है ?"

"मेरा ही आदेश मानते हो तो सुनो वो काम कभी मत करना जिससे मन में भय, ग्लानि पैदा हो। दूसरे का नुकसान हो। बस यही पाप है। बाकी सब परमात्मा है। जो हो रहा है जिस पर तुम्हारा बस नहीं। उस पर शोक मत करना। ईश्वर की लीला समझकर देखना। दुख में भी सुख तलाशना जीवन का पूरा सम्मान करना है। भागना मत कभी भी। मुकाबला करना। जो मिल जाय वो हरि कृपा जो न मिले उसे हरि इच्छा जानकर स्वीकार करना।"

मेहता जी बाबाजी के चरण स्पर्श किये और वापिस घर की ओर जल दिये।

पता : पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

गाय का घास खाकर दूध देना तथा सांप का दूध पीकर जहर उगलना स्वभाव है। इसी प्रकार महात्मा का भला-बुरा सुनकर भी प्रकाश देना स्वभाव है।

प्रेरणात्मक

'महर्षि दयानन्द का आदर्श एवं प्रेरक जीवन'

- मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द वैदिक विचारधारा के ऋषि, विद्वान्, आप्तपुरुष, सन्त, महात्मा सहित देश व समाज के हितैषी अपूर्व महापुरुष थे। उनका जीवन सारी मनुष्य जाति के लिए आदर्श, प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। आज के लेख में हम उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण प्रेरणादायक घटनाओं को प्रस्तुत कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि इनके अध्ययन व अनुकरण से सभी को लाभ होगा।

पहली घटना हम बरेली में उनके व्याख्यान की ले रहे हैं, जिसका वर्णन स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग के पथिक' में किया है। बरेली में एक दिन स्वामी जी व्याख्यान दे रहे थे। व्याख्यान में नगर के गणमान्य पुरुष और बड़े-बड़े राज-अधिकारी, कमिश्नर आदि सभी उपस्थित थे। व्याख्यान में ईसाईमत की मिथ्या मान्यताओं का खूब खण्डन किया गया। दूसरे दिन व्याख्यान से पूर्व उनसे कहा गया कि आप इतना खण्डन न करे, इससे उच्च अंग्रेज अधिकारी अप्रसन्न होंगे। दूसरे दिन का व्याख्यान प्रारम्भ हुआ। व्याख्यान में कमिश्नर आदि सभी उच्च राज्याधिकारी उपस्थित थे। स्वामी जी ने गरज कर कहा- **"लोग कहते हैं कि असत्य का खण्डन न कीजिए, पर चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए, परिणाम कुछ भी हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।"** अभय से पूर्ण मनुष्य के ऐसेजीवन को ही कहते हैं, ईश्वर की सत्ता और सत्य पर अटल विश्वास है।

दूसरी घटना कर्णवास में महर्षि दयानन्द के प्रवास की ले रहे हैं। जब स्वामीजी यहां आये थे तो अनूपशहर का एक अच्छा संस्कृतज्ञ विद्वान् पं. हीरावल्लभ अपने कुछ साथियों के साथ शास्त्रार्थ के लिए स्वामी जी के पास आया। सभा संगठित हुई। पं. हीरावल्लभ ने बीच में ठाकुरजी का सिंहासन, जिस पर शालिग्रामादि की मूर्तियां थी, रखकर सभा में प्रतिज्ञा की कि मैं स्वामी जी से इन्हें भोग लगवाकर ही उठूंगा। छह दिन तक बराबर धाराप्रवाह संस्कृत में शास्त्रार्थ होता रहा। **सातवें दिन पण्डित हीरावल्लभ ने सभा में प्रकट कर दिया कि जो कुछ स्वामी जी कहते हैं वह ठीक है और सिंहासन पर वेद की स्थापना की।** महर्षि दयानन्द ने सभी उपलब्ध शास्त्रार्थ और प्रवचन पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के ग्रन्थ **'महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन'** में उपलब्ध है। पाठक इस ग्रन्थ का अध्ययन कर इन ज्ञानवर्धक सामग्री से लाभान्वित हो सकते हैं।

कर्णवास की ही एक अन्य घटना इस प्रकार है कि एक दिन स्वामी जी गंगा तट पर उपदेश कर रहे थे। बरौली के राव कर्णसिंह अपने कुछ हथियार-बन्द साथियों सहित वहां आए और बातचीत करते-करते बड़े क्रोध में आकर उन्होने तलवार खींचकर स्वामीजी पर आक्रमण किया। स्वामीजी ने तलवार छीनकर दो टुकड़े कर दिये और राव को पकड़कर कहा कि **'मैं तुम्हारे साथ इस समय वही सलूक कर सकता हूं जो किसी आततायी (आतंकवादी) के साथ किया जा सकता है। परन्तु मैं संन्यासी हूं इसलिए छोड़ता हूँ। जाओ, ईश्वर तुम्हें सुमति देवे।'**

स्वामी दयानन्द जी का जीवन महान था। उनकी महानता का एक उदाहरण तब सामने आया जब उन्होंने अपनी हत्या का प्रयास करने वाले को

न केवल क्षमा कर दिया, अपितु वैधानिक दण्ड से भी बचाया। यह घटना अनूपशहर की है । वहां स्वामी जी के सच्चे और स्पष्ट उपदेश से अप्रसन्न होकर एक दुष्ट पुरुष ने स्वामीजी के पास आकर नम्रता प्रदर्शित करते हुए एक पान का बीड़ा उनको भेंट किया। स्वामी जी ने लेकर उसे मुंह में रख लिया। मुंह में रखते ही उन्हें मालूम हो गया कि इसमें विष मिला हुआ है। योग संबंधी बस्ती और न्यौली-क्रियाओं को करके उन्होने उसके प्रभाव को नष्ट कर दिया। जब यह हाल वहां के मजिस्ट्रेट सैयद मुहम्मद को मालूम हुआ तो उसने उस दुष्ट व्यक्ति को पकड़कर हवालात में डाल दिया और स्वामी जी के पास आकर अपनी कारगुजारी प्रकट करने आया तो स्वामी जी ने अपनी अप्रसन्नता प्रकट करते हुए उसे छुड़वा दिया और कहा कि **'मैं दुनियां को कैद कराने नहीं अपितु कैद से छुड़ाने आया हूँ ।'**

स्वामी जी जब उदयपुर में थे तब वहां एक दिन उदयपुर के महाराजा महाराणा सज्जनसिंह जी को मनुस्मृति का पाठ पढ़ाते हुए कहा कि **"यदि कोई अधिकारी धर्मपूर्वक आज्ञा दे तभी उसका पालन करना चाहिए। अधर्म की बात न माननी चाहिए ।"** इस पर सरदारगढ़ के ठाकुर मोहनसिंह जी ने कहा कि महाराणा हमारे राजा हैं, यदि इनकी कोई बात हम अधर्मयुक्त बतलाकर न मानें तो ये हमारा राज छीन लेंगे । इस पर स्वामीजी ने कहा कि - **"धर्महीन हो जाने से और अधर्म के काम करके अन्न खाने से तो भीख मांगकर पेट का पालन करना अच्छा है ।"** इस घटना में स्वामी जी ने उदयपुर के महाराजा के भय से सर्वथा शून्य होकर धर्म को सर्वोपरि महत्व दिया। इससे यह भी शिक्षा मिलती है कि किसी भी मनुष्य को अपने आश्रयदाताओं व उच्चतम अधिकारियों की धर्म विरुद्ध आज्ञाओं को न मानना चाहिये भले ही इससे उनकी कितनी भी हानि क्यों न हो।

उदयपुर की ही एक अन्य घटना है। वहां एक दिन एकान्त में स्वामीजी से महाराजा सज्जनसिंह जी ने कहा कि महाराज ! आप मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दें। यदि आप इसे स्वीकार कर लें तो एक लिंग महादेव के मन्दिर, जिसके साथ लाखों रुपये की जायदाद लगी हुई है, आपकी होगी और आप सारे राज्य के गुरु माने जाएंगे। स्वामी जी ने उत्तर दिया - **आपके सारे राज्य से मैं एक दौड़ लगाकर कुछ समय में बाहर जा सकता हूं परन्तु ईश्वर के संसार से दूर नहीं जा सकता, फिर मैं किस प्रकार इस धर्मविरुद्ध तुच्छ प्रलोभन में आकर ईश्वर की आज्ञा भंग करूँ ।** यह है ईश्वर, उसकी व्यवस्था व धर्म में पूर्ण विश्वास और स्वार्थ से रहित सच्चे त्याग का उदाहरण है ।

प्रयाग की एक घटना है । एक दिन स्वामीजी एक सभा में उपस्थित थे। पं. सुन्दरलालजी आदि कुछ सभ्य पुरुष भी उपस्थित थे। स्वामीजी यकायक हंस पड़े। कारण पूछने पर बतलाया कि एक पुरुष मेरे पास आ रहा है, उसके आने पर एक कौतुक दिखाई देगा। थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति स्वामी जी के लिए कुछ विष मिश्रित मिठाई लाकर कहने लगा कि महाराज इसमें से कुछ भोग लगाएँ। स्वामी जी ने थोड़ी सी मिठाई उठाकर लाने वाले को दी, उसे कहा कि इसे तुम खाओ, परन्तु उसने मिठाई लेने और खाने से इन्कार कर दिया । स्वामी जी इस पर हंस पड़े और पं. सुन्दरलालजी आदि पुरुषों से कहा कि देखों यह अपने पाप के कारण स्वयं कांप रहा है और लज्जित है। इसे पर्याप्त दण्ड मिल गया है अब और दण्ड की आवश्यकता नहीं । यह थी दयानन्द जी की योग व ईश्वरोपासना की शक्ति और दयालुता।

स्वामी जी की मृत्यु जोधपुर में उन्हें विष दिये जाने के कारण हुई थी। स्वामी जी जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह के छोटे भाई कुंवर प्रताप सिंह व महाराजा के निमंत्रण पर पधारे थे। उन्होने अपने प्रवचनों में राजाओं के दुर्व्यसनों मुख्यतः राजाओं की वेश्याओं में आसक्ति वा वैश्याचारिता का तीव्र खण्डन किया था। अपनी शिक्षाओं में उन्होने वैश्याओं की उपमा कुतिया से और राजाओं की उपमा शेर से दी थी। मत-मतान्तरों की मिथ्या बातों का खण्डन तो वह करते ही थे। अतः एक षड़यन्त्र के अन्तर्गत उनके विरोधियों ने उनके पाचक को अपने वश में करके उसके द्वारा स्वामीजी को सितम्बर १८८३ के अन्तिम सप्ताह की एक रात्रि को दूध में जहर डलवाकर पिलवा दिया था। स्वामीजी को इसका पता देर रात्रि तब चला जब उन्हें उदरशूल, दस्त होने के साथ वमन आदि की शिकायत हुई। स्वामी जी सारी स्थिति का

पता चल जाने पर उन्होने अपने पाचक को पास बुलाकर उसे कुछ रुपये देते हुए कहा कि इन्हें लेकर नेपाल राज्य आदि किसी ऐसे स्थान पर चले जाओ जहां तुझे पकड़ा न जा सके तुझे अपने प्राण न खोने पड़े। अपने प्राणहर्त्ता की इस प्रकार रक्षा कर उन्होंने इतिहास में एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास में दुर्लभ है।

स्वामीजी ने पूना में अपने जीवन की घटनाओं विषयक एक उपदेश दिया था। उन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी के निवेदन पर अपनी संक्षिप्त आत्मकथा भी लिखी थी। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके खोजपूर्ण जीवन चरित्र प्रकाश में आये, जिनमें पं. लेखराम, पं. गोपालराव हरि, पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, मास्टर लक्ष्मण आर्य, श्री हरिविलास सारदा, श्री रामविलास शारदा आदि प्रमुख है। यह सभी जीवनचरित रामायण एवं महाभारत की ही भांति आदर्श, प्रेरणादायक तथा पाठक में धर्म के प्रति अनुराग व बोध उत्पन्न करने में समर्थ है। इन्हें पढ़कर एक दस्यु वृत्ति का मनुष्य भी साधु बन सकता है और सच्चा मानव जीवन व्यतीत कर सकता है। पाठकों को इन जीवन चरितों से लाभ उठाना चाहिए।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

पता नहीं क्यों ?

पता नहीं क्यों .... ?
आदमी शैतानी आदमी
अपने स्वार्थों के लिए
धर्म, जाति, फर्ज, देश व समाज
तक को बेच देता है, पद-धन के लिए
घर की इज्जत तक को बाजार की वस्तु बना देता है।

पता नहीं क्यों .... ?
आदमी शैतानी आदमी
आए दिनों टी.वी. व अखबार में छाने के लिए
अपने पुरखों की संस्कृति की धज्जियां उड़ा रहा है
अपने गौरवशाली वंश को लजा रहा है।

पता नहीं क्यों ... ?
आदमी शैतानी आदमी
देश-समाज को तोड़ने का काम कर रहा है
देशद्रोही बनकर स्विस बैंक भर रहा है
अपना घर बनाने के लिए
सारा देश ही बेच रहा है
ये शैतान आदमी क्या कर रहा है... ?

रचनाकार- मुकेश वर्मा (कलाकार)
ग्राम रावली, तारोली, जनपद-आगरा-२८३१११

""समर्पण""

इस जीवन की हर, चाहे वो सुख हो, दुख हो
पाप हो पुण्य, भला हो या बुरा हो
अपने जीवन की समस्त कर्मों को आप पर समर्पित करते हैं
हे प्रभु इन्हें स्वीकार करो, हे दयानन्द मेरा बेड़ापार करो

नाम तेरा जग में सच्चा, बाकी सब है झूठा
जिस दिन सांसो की डोरी टूटी, उस दिन हर रिश्ता है टूटा
हे जगत के दाता मेरा कल्याण करो
माया मोह के बंधन से मेरा बेड़ापार करो

वैदिक उपदेश देकर तुने जन-धन का कल्याण किया
अमीर-गरीब का भेद मिटाकर सबको मित्र स्वीकार किया
हे दयानन्द मेरे अन्धकार जीवन में प्रकाश करो
हे दयानन्द मेरा बेड़ापार करो

मैं अज्ञानी तू ज्ञानी मुझे बस इतना ज्ञान दे
सत्य और झूठ को जान सकूं ऐसी कोई पहचान दे
वो राधा के श्याम प्रेम रस की बरसात करो
हे दयानन्द मेरा बेड़ापार करो।

रचनाकार-
भूपेन्द्र प्रताप चौहान (सहा. शिक्षक)
मु.पो. बांसमुड़ा, मदनपुर, तह. खरसिया, जिला-रायगढ़-४९६६६१

पुण्य स्मरण

दिल में क्रांति लिए एक दिलेर : शहीद चन्द्रशेखर आजाद

२७ फरवरी बलिदान दिवस

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई क्रांतिकारी वीर-सपूतों की याद आज भी हमारी रुह में जोश और देशप्रेम की एक लहर पैदा कर देती है। एक वह समय था जब लोग अपना सब कुछ छोड़कर देश को आजाद कराने के लिए बलिदान देने को तैयार रहते थे और एक आज का समय है जब अपने ही देश के नेता अपनी ही जनता को मार कर खाने में तुले हैं।

देशभक्ति की जो मिशाल हमारे देश के क्रांतिकारियों ने पैदा की थी अगर उसे आग की तरह फैलाया जाता तो संभव था आजादी हमें जल्दी मिल जाती लेकिन नरमदल और गरमदल के मतभेदों के कारण आज भी लोग क्रांतिकारियों को वह सम्मान नहीं देते जो उन्हें देना चाहिए था। क्रांतिकारी नेताओं ने कभी भी राजनीति में दखल देने की कोशिश नहीं की और शायद यही वजह है कि लोग उन्हें कम आंकते थे, पर असल मायनों में जो वीरता और पराक्रम की कहानी हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने रखी थी वह आजादी की लड़ाई की विशेष कड़ी थी जिसके बिना आजादी मिलना नामुमकिन था। देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी मिशाल थे शहीद क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद २५ साल की उम्र में भारत के लिए शहीद होने वाले इस महापुरुष के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है। अपने पराक्रम से उन्होने अंग्रेजों के अंदर इतना खौफ पैदा कर दिया था कि उनकी मौत के बाद भी अंग्रेज उनके मृत शरीर को आधे घंटे तक सिर्फ देखते रहे थे, उन्हें डर था कि अगर वह पास गए तो कहीं चन्द्रशेखर आजाद उन्हें मार डालें, वीरता के ऐसे नमूने कम ही देखने को मिलते हैं।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बदरका गांव में २३ जुलाई सन् १९०६ को हुआ था। उनके पिता पंडिता सीताराम तिवारी थे। उनके पिता ने अकाल की वजह से उत्तर प्रदेश को छोड़कर अलीराजपुर रियासत के ग्राम भावरा में पलायन किया था। चन्द्रशेखर जब बड़े हुए तो वह अपने माता-पिता को छोड़कर भाग गये और बनारस में अपने फूफा शिवविनायक मिश्र के पास आकर रहने लगे, उनके साथ रहते हुए उन्होने संस्कृत विद्यापीठ में संस्कृत सीखी। चन्द्रशेखर ने बचपन में ही स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा ले लिया था। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्होने विदेशी सामानों का बहिष्कार किया था। इसी असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें पहली बार पंद्रह वर्ष की आयु में सजा मिली। उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त पकड़ा गया और जब मजिस्ट्रेट ने उसका नाम पूछा, उन्होने कहा "आजाद" तुम्हारे पिता का क्या नाम है? मेरे पिता का नाम "स्वाधीन" है, तुम्हारा घर कहाँ पर है ? मेरा घर "जेलखाना" है। इस तरह के उत्तर से मजिस्ट्रेट इतना गुस्सा हुए कि उन्होने बालक चन्द्रशेखर को पंद्रह बेतों की सजा दे दी। कहते हैं चन्द्रशेखर हर बेंत की मार के बाद "भारत माता की जय" नारा लगाते थे। उनकी इस बहादुरी के बाद से ही उनका नाम चन्द्रशेखर "आजाद" पड़ गया।सन् १९२२ में गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन को अचानक बन्द कर देने के कारण उनकी विचारधारा में बदलाव आया और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशियेशन के सक्रिय सदस्य बन गये। इस संस्था के माध्यम से उन्होने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में पहले ९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड किया और फरार हो गये। बाद में एक-एक करके सभी क्रान्तिकारी पकड़े गए, पर चन्द्रशेखर आजाद कभी भी पुलिस के हाथ में नहीं आए।

अंग्रेजों से छुपते-छुपाते उन्होने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को और अधिक सक्रिय बनाने के लिए एक सुदृढ़ क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना नामक उनके संगठन में भगतसिंह जैसे महान क्रांतिकारी भी जुड़े थे। धीरे-धीरे चन्द्रशेखर आजाद

ने उत्तरप्रदेश के साथ पंजाब में भी अपनी पकड़ बना ली।

साइमन कमीशन के विरोध में जब पंजाब में जगह-जगह लोगों ने प्रदर्शन किया तब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बेरहमी से लाठियाँ बरसाई। पंजाब के लोकप्रिय नेता लाला लाजपतराय को इतनी लाठियाँ लगीं की कुछ दिन के बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और पार्टी के अन्य सदस्यों ने लाला जी पर लाठियाँ चलाने वाले पुलिस अधीक्षक सांडर्स को मृत्युदण्ड देने का निश्चय कर लिया। १७ दिसम्बर १९२८ को चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और राजगुरू ने सांडर्स को मार डाला। चन्द्रशेखर आजाद के ही नेतृत्व में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने ८ अप्रेल १९२९ को दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में बम विस्फोट किए, लेकिन बम विस्फोट के अहम क्रांतिकारियों को पकड़ लिया गया और सुखदेव, राजगुरू और भगतसिंह को फांसी दे दी गई, लेकिन फिर भी चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों को चकमा देकर जगह-जगह जाकर अपनी क्रांतिकारियों गतिविधियों को अंजाम दिया। लेकिन फिर २७ फरवरी १९३१ का वह दिन भी आया जब इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में देश के सबसे बड़े क्रांतिकारी को मार दिया गया। २७ फरवरी १९३१ के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहाँ अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे। अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होने खुद को मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद ही आत्महत्या कर ली। कहते हैं मौत के बाद अंग्रेजी अफसर और पुलिसवाले चन्द्रशेखर आजाद की लाश के पास जाने से भी डर रहे थे।

चन्द्रशेखर आजाद को वेष बदलने में बहुत माहिर माना जाता था, वह रूसी क्रांतिकारियों की कहानी से बहुत प्रेरित थे। चन्द्रशेखर आजाद की वीरता की कहानियाँ कई हैं जो आज भी युवाओं में देशप्रेम की लहर पैदा कर देती है। देश को अपने इस सच्चे वीर स्वतंत्रता सेनानी पर हमेशा गर्व रहेगा।

जयन्ती उच्च कोटि के विद्वान व प्रगल्भ लेखक - पं. चमूपति

चमूपति एक उच्च कोटि के विद्वान, प्रगल्भ लेखक, भावुक कवि थे। इनका जन्म १५ फरवरी १८९३ को बहावलपुर (पाकिस्तान) में हुआ था। पिता श्री मेहता वसंदाराम और माता श्रीमती लक्ष्मी देवी थी। इनका बाल्यकाल का नाम चम्पतराय था। मेट्रिक परीक्षा पास कर ये बहालपुर के इजर्टअन कालेज में प्रविष्ट हुये। यहाँ पड़ते हुए आपने उर्दू में कविता लिखना आरंभ कर दिया। सर्वप्रथम सिख धर्म का ग्रन्थ जपजी का उर्दू काव्य अनुवाद किया। एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आप बहावलपुर राज्य में अध्यापक बन गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में अभी स्थिरता नहीं आई थी। वे प्रारंभ में सिख धर्म की और आकृष्ट हुए परन्तु पुनः नास्तिकता के विचारों ने जोर मारा। इसी बीच उन्हें महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ पढ़ने का अवसर मिला।

नास्तिकता के विचारों से तो छुटकारा मिला परन्तु अब उनका झुकाव शंकर वेदांत की ओर हो गया। धीरे-धीरे वेदान्त के प्रति भी आस्था शिथिल होने लगी, परन्तु मूर्तिपूजा के प्रति आस्था बढ़ने लगी। अंततः चम्पतराय के धार्मिक विचारों की चरम परिणिति आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म की विचारधारा को स्वीकार कर लेने में हुई। अब वे चम्पतराय से चमूपति बन गये और राज्य सेवा को छोड़कर गुरुकुल मुल्तान में चले गये। दो वर्ष तक इस गुरुकुल प्रतिष्ठाता पद पर कार्य किया। आचार्य रामदेव जी की प्रेरणा से पं. चमूपति लाहौर आ गये और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्य करने लगे। उन्होंने सभा की आजीवन सेवा का व्रत लेने वाले लोगों ने दयानन्द सदन की स्थापना की। चमूपति भी सदन के सदस्य बने और प्रतिज्ञा ली, इससे पूर्व मैं सोच समझकर अपनी बुद्धि से स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करता था। मैंने अपनी वह स्वतंत्रता आर्य प्रतिनिधि सभा को अर्पण कर दी है। अब मैं वह करूंगा जो सभा कहेंगी। अब मैं अपने लिये कुछ नहीं सोचूंगा। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आर्य का संपादक कुछ वर्ष लाहौर में रहकर किया। सन् १९२७ में चमूपति जी गुरुकुल कांगड़ी में आचार्य पद पर नियुक्त हुए। १९३३ में वे गुरुकुल के अधिष्ठाता बने। १५ जुलाई १९३७ को उनका निधन हुआ।

पुण्य स्मरण दयानन्दध्येय धर्मा-स्वामी दिव्यानन्द

रत्नगर्भा भारतभूमि हर क्षेत्र में उर्वरा रही है। विश्व समुदाय को अपनी ज्ञान धारा से ऊर्जस्वीत करने वाली वेदवाणी यहीं प्रादुर्भूत हुई है जो समस्त संसार को जीवनदायी आलोक देने में समर्थ हुई है। इस भूमि ने अपनी पुण्यमयी गोद में ऐसे-ऐसे महानपुरुषों को स्थान दिया है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से न केवल माँ भारती की आन-बान-शान को अक्षुण्ण रखा है वरन् सर्वत्र अपनी कार्यकुशलता का जबर्दस्त परिचय देते हुए अपनी सफलता के परचम लहराये हैं। ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व के धनी रहे पू. स्वामी दिव्यानन्द जी जिन्होंने मातृभूमि झांसी का परित्याग कर सुदूर छत्तीसगढ़ को अपनी कर्मभूमि बनाया। तप-त्याग की भट्ठी में कुन्दन वन दमकते उत्साह व उमंग के साथ धर्म संस्कृति व राष्ट्रोत्थान में ऐसी लगन लगायी कि वे एक इतिहास पुरुष बन कर निखरे।

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के अधिकारी वृन्द काफी समय से उच्चकोटि के उपदेशक का अभाव महसूस कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली जाकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती से एक महोपदेशक को मध्यप्रदेश भेजने के लिए अनुरोध किया। पूज्य प्रधान जी ने अनुरोध स्वीकार कर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती को मध्यप्रदेश में वैदिक नाद गूंजाने प्रेरित किया। गुरुदेव की प्रेरणा को शिरोधार्य कर स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज सन् १९५१ में मध्यप्रदेश व विदर्भ पधारे। आर्यावर्त भारत के हृदय स्थल में अवस्थित मध्यप्रदेश व विदर्भ क्षेत्र सर्वथा पिछड़ा हुआ और अविकसित था। अज्ञान-अंधकार का घटाटोप बादल घिरा यह प्रदेश शिक्षा क्षेत्र में भी पिछड़ा हुआ था। ऐसे प्रदेश में वैदिक धर्म का प्रचार करना लोहे के चने चबाने के समान था। किन्तु हमारे स्वामी दिव्यानन्द भी सामान्य नहीं थे। महान् चिन्तक, तार्किक और सामयिक थे। योगाभ्यासी और वेद के परमभक्त थे। चुनौतियों से स्फूर्ति पाने वाले स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती पीछे हटने वाले नहीं थे।

मध्यप्रदेश में वेदवाणी का गुंजार आरंभ किया। थोड़े ही दिनों में समूचे प्रदेश को उन्होंने आत्मसात् कर दिया। प्रभाव इतना पड़ा कि एक ही वर्ष में आर्य प्रतिनधि सभा व म.प्र. विदर्भ के आजीवन सदस्य स्वीकार कर लिये गये। तत्कालीन सभा प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त, स्वामी जी की विद्वत्ता, नम्रता और तेजोमय आभा से अत्यधिक प्रभावित हुए उनसे अनुरोध कर उन्हें वेद प्रचार अधिष्ठाता के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। सचमुच निष्पक्ष जौहरी ही रत्नादि को सही पहचान पाते है। श्री गुप्त जी ने सही व्यक्ति को सही पद पर अधिष्ठित कर अपने को ही धन्य किया, अन्यथा तो रेवड़ियाँ बांटने वो सत्ताधीश, अपने ही चाटुकारों, पाखिण्डयों अथवा आत्मश्लाघा में रत हिरण्यकश्यपों को ही पदांकित कर लिया करते हैं। विघ्न-बाधाओं तथा मतवादियों के कुतर्कों का सामना कर सुदूर गांव देहातों में वेद ही की बात कहने वाले वेद प्रचार अधिष्ठाता होने के योग्य होते हैं। स्वामी दिव्यानन्द जी उस पद के लिये नहीं आये थे, अपितु उस पद का सृजन उनके लिये हुआ था। स्वामी साथ खाने लगे। यहाँ हिन्दू दरवेश की परीक्षा थी, परिणामतः पूर्ववत् निर्विकल्प भाव से बासी खाते रहे। प्रातः जब बिदा होने लगे तो वह वनासी शिक्षक भाव विभो हो चरणों में गिर पड़ा। कहने लगा हिन्दुओं में भी उदार, सहृदय साधु हैं, ये मुझे मालूम न था। आज से मैं पुनः अपने पूर्वजों के मान्य धर्म को अंगीकार करना चाहता हूँ, आप मुझे दीक्षा दें। शुद्धि संस्कार द्वारा उस परिवार को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। आगे चलकर वह पट्ट-शिष्य हो गया। इस क्षेत्र में उसने अनेकों बिछुड़े भाईयों का परावर्तन कराया।

सन् १९५२ में राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के सामने रांची में स्वामी जी के नेतृत्व में आदिवासियों ने अराष्ट्रीय तत्वों के खिलाफ जबरदस्त प्रदर्शन किया गया, ज्ञापन सौंपा

गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रदेश शासन ने मिशनरियों की जांच हेतु माननीय भवानी शंकर नियोगी की अध्यक्षता में नियोगी जांच समिति बनाई। उक्त नियोगी कमेटी को स्वामी दिव्यानन्द जी ने जगह-जगह ले जाकर प्रमाण उपलब्ध कराये और भरपूर सहयोग दिया। नियोगी जांच समिति की रिपोर्ट के आधार पर शासन ने मध्यप्रदेश धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम १९६८ में पास कर लागू किया। जिसके अनुसार धर्म परिवर्तन कराने वाली संस्था अथवा धर्म प्रचारक द्वारा जिलाध्यक्ष को १५ दिन के भीतर विवरण (प्रज्ञापना) भेजना अनिवार्य घोषित किया गया। इस प्रकार के अनेक साहसी कारनामें पू. स्वामी दिव्यानन्द जी के जीवन में भरे पड़े हैं। विपरीत परिस्थिति में बिलकुल विचलित न होना। उनकी अन्यतम विशेषता थी धीर वीर गंभीर व्यक्तित्व के धनी स्वामी के जीवन का प्रत्येक कोना गजब के आत्मविश्वास से हरदम लबालब भरा रहता था, यही वजह है उनसे मुलाकात करने वाला एक स्फूर्ति व ताजगी का अनुभव करता था, आज आवश्यकता है स्वामी जी जैसे मिशनरी वैदिक धर्म के सेवक की, जो निश्छल व निःस्वार्थ होकर समाज सेवा को ही सर्वोपरि समझे।

- आचार्य कर्मवीर

आइये प्रतिज्ञा लें.

१. हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सृष्टिकर्त्ता परमात्मा उसकी सृष्टि और ईश्वरीय ज्ञान में हमारी आस्था रहेगी।

२. जीवन के उदात्त मानव मूल्यों की रक्षा करते हुए हम बराबर स्नेह और सौमनस्य का प्रसार करेंगे और किसी ऐसी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन नहीं देंगे जिसमें आपस में ईर्ष्या की भावना बढ़े।

३. जीवन में अण्डे, मांस, मछली, शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करेंगे।

४. बिना जाति भेद, वर्ण भेद के हम दीन, हीन, पीड़ितों, असहायों, रोगियों और अशक्तों की यथाशक्ति निष्काम भाव और निस्वार्थता से सेवा करेंगे।

आर्य जाति की इक पहचान है यज्ञोपवीत।
आर्य नर-नारियों की शान है यज्ञोपवीत।।
धर्म है यज्ञोपवीत, ईमान है यज्ञोपवीत।
हम ये कहते हैं हमारी जान है यज्ञोपवीत।।

हास्यम्

एक आदमी अपनी पत्नी और सोलह बच्चों के साथ घर से बाहर निकला अगले चौराहे पर ही खड़े एक सिपाहीने उसे पकड़ लिया, उस आदमी ने अपने पकड़े जाने का कारण पूछा तो सिपाही ने कहा, तुम ने कुछ न कुछ बुरा काम तो किया ही होगा, तभी तो यह भीड़ तुम्हारे पीछे चली आ रही है।

●

"डाक्टर साहब मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूँ, आपके इलाज से मेरा बहुत लाभ हुआ है।"
"लेकिन मैं ने तो तुम्हारा इलाज नहीं किया, मैने आज तुम्हें पहली बार देखा है।"
"हाँ, लेकिन आप मेरे चाचा का इलाज कर रहे थे, अब मैं उनकी जायदाद का मालिक बन गया हूँ।"

●●

अजनबी के चेहरे पर कृतज्ञता के भाव थे, वह एक आदमी के घर में जा कर बोला, "आप ने दस साल हुए तब मुझे दस रुपये देकर मेरी सहायता की थी। अब तक मैं उसे भूला नहीं हूँ।"
"अच्छा ! मैं तो भूल ही गया था। तो आप मुझे वह रुपये वापस करने आए हैं ?"
"नहीं मैं इस शहर से गुजर रहा था। मैंने सोचा आप से दस रुपये और लेता चलूँ।"

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से पैरालिसिस (लकवा) का सफल उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

लकवा या पैरालिसिस नाम सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लकवा का एलोपैथी में उपचार होता है पर होम्योपैथी में कई दवाएँ रामबाण साबित होती है। लकवा जिसे सामान्य भाषा में पक्षाघात, फालिज, कम्पवायु आदि के नाम से जाना जाता है। चिकित्सीय भाषा में पैरालिसिस के नाम से जाना जाता है। लकवा बहुत ही भयंकर रोगा है। जो शरीर को गतिहीन बना देता है और लकवाग्रस्त व्यक्ति के विभिन्न भागों के ऐच्छिक गति समाप्त हो जाती है, जिसे रोगी दूसरों पर निर्भर हो जाता है।

लकवा का मतलब मांसपेशियों के गति का समाप्त हो जाना तथा शरीर के अन्य भागों में समन्वय समाप्त हो जाना है। जिन भागों में लकवा मारता है, जैसे हाथों, चेहरे व पैर आदि उन विशेष भागों की मांसपेशियों की गति समाप्त हो जाती है। मांसपेशियों की गति के साथ-साथ इसमें संवेदना का अभाव हो जाता है जिससे उस व्यक्ति के उस स्थान पर दर्द, ठंडक, गर्मी आदि का अहसास नहीं होता है। लम्बे समय तक लकवाग्रस्त रोगी में प्रभावित भाग का रक्त प्रवाह एवं अन्य मेटाबोलिक क्रियाएं लगभग बंद हो जाती है। जिससे उस अंग की मांसपेशियां सूखने लगती है, जिससे बहुत गंभीर स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

लकवा प्रमुख रुप से इतने प्रकार का हो सकता है - लकवा जिस अंग को प्रभावित करता है उसके अनुसार उसका विभाजन किया जाता है।

मोनोप्लेजिया :- इसमें शरीर का एक हाथ या पैर प्रभावित होता है। **डिप्लेजिया** : जिनमें शरीर के दोनों हाथ या पैर पर प्रभावित होते हैं। **पैराप्लेजिया** :- जिसमें शरीर के दोनों धड़ प्रभावित हो जाते हैं। **हेमिप्लेजिया** : इसमें तरफ के अंग प्रभावित होते है। **क्वाड्रिप्लेजिया** : इसमें धड़ और चारों हाथ पैर प्रभावित होते हैं।

लकवा के कारण :- लकवा हमेशा केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र जिसमें मस्तिष्क एवं स्पाइनल कार्ड शामिल है में गड़बड़ी अथवा पेरिफेरल नर्वस सिस्टम में गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार है जिसके कारण होता है। निम्न कारण जो तंत्रिका की गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार हैं, जिसके कारण पक्षाघात होता है।

(१) स्ट्रोक :- स्ट्रोक लकवा का मुख्य कारण है। इसमें मस्तिष्क का निश्चित स्थान कार्य करना बंद कर देता है। जिससे शरीर को उचित संकेत भेज एवं प्राप्त नहीं कर पाते हैं। स्ट्रोक हाथ व पैर में लकवा की सम्भावना ज्यादा रहती है।

(२) ट्यूमर :- विभिन्न प्रकार के ट्यूमर मस्तिष्क अथवा स्पाइनल कार्ड में पाए जाते हैं। वह वहां के रक्त प्रवाह को प्रभावित करके लकवा उत्पन्न करते हैं।

(३) ट्रामा अथवा चोट :- चोट के कारण अंदरुनी रक्त प्रवाह मस्तिष्क एवं स्पाइनल कार्ड में रक्त प्रवाह कम हो जाता है जिससे लकवा हो सकता है।

(४) सेलिब्रल पैल्सि :- ये बच्चों में जन्म के समय होती है जिसके कारण लकवा हो सकता है। इसके अतिरिक्त स्थितियां स्पाइनल कार्ड की गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार हैं। (१) स्लिप डिस्क (२) न्यूरोडिजनरेटिक डिस्क (३) स्पोन्डोलासिस इसके अतिरिक्त लकवा के अन्य कारण भी हो सकते हैं।

लकवा के लक्षण :- लकवा को आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि इसके लक्षण बहुत ही स्पष्ट होते हैं :-

(१) रोगी प्रभावित अंग में दर्द, गर्म, ठंडक आदि का अहसास नहीं कर पाता है। दर्द न होना रोगी के लिए सबसे बड़ा दर्द है।

(२) प्रभावित अंग में झनझनाहट महसूस हो सकती है।

(३) रोगी अचेता अथवा बेहोशी की अवस्था में जा सकता है।

(४) रोगी की दृष्टि में गड़बड़ी हो सकती है।

लकवा से होने वाली जटिलताएँ :- यदि लकवा लम्बे समय तक रहता है तो यह प्रभावित अंग को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। इसके कारण शरीर मात्र हड्डी का ढांचा बन जाता है। रोगी को देखने, सुनने व बोलने में परेशानी होने लगती है। गंभीर लकवाग्रस्त रोगी को चिकित्सालय में भर्ती करना चाहिए। होम्योपैथी में लकवा का उपचार सम्भव है। होम्योपैथिक उपचार में रोगी के शारीरिक, मानसिक एवं अन्य लक्षणों को दृष्टिगत रखते हुए औषधि का चयन किया जाता है। परन्तु ध्यान रहे होम्योपैथिक औषधियां अनुभवी व योग्य चिकित्सक की सलाह से लेनी चाहिए।

कुछ दवाएं जो ज्यादा चलन में उसमें रस टास्क नाम की औषधि शरीर के निचले हिस्से का लकवा इसके अतिरिक्त यदि लकवा गीला होने या नमी स्थानों में रहने से हो, यदि लकवा टाइफाइड के बुखार के बाद हो उसमें लाभकारी होती है। इसमें शरीर अंगों में जकड़न में हो जाती तथा ये लकवा के पुराने मरीजों को बेहद लाभ पहुंचाता है। बच्चों में होने वाली लकवा में लाभकारी होता है।

क्रास्टिकम नाम की यह होम्पोयैथी दवा ठंड के कारण लकवा मारने या सर्दियों के मौसम में पैरालिसिस का अटैक पड़ने पर प्रभावी हो सकती है। इसके अलावा जीभ, चेहरा या गले पर अचानक पड़ने वाले लकवा में भी कारगर साबित होता है। **बेलाडोना** नाम की औषधि से शरीर के सीधी तरफ का लकवा ठीक होता है। इस प्रकार के लकवा से प्रभावित व्यक्ति विक्षिप्त तक हो जाता है। इसमें इसी प्रकार **जक्सवोमिका** का प्रयोग तब लाभकारी होता है। शरीर का निचला हिस्सा लकवा से प्रभावित हो और उन अंगों के हिलाने डुलाने में बहुत जोर लगाना पड़ता हो ऐसे लक्षणों में **जक्सवोमिका** रामबाण साबित हो सकती है।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- लकवा के उपचार में प्रयुक्त होने वाली अन्य औषधियां में कॉस्टिकम, जैलसिमियम, पल्म्बम डल्कामारा, सल्फर, काकुलस, नैट्रमम्योर, कैलमिया, अर्जेटम, नाइट्रिकम, एकोमाइट, एल्युमिना आदि प्रमुख है। इसके अलावा लकवाग्रस्त रोगी को ताजा खाना देना चाहिए। इसके अतिरिक्त चावल और गेहूँ के साथ ही मौसमी फल भी फायदा करते हैं।

उपचार :- कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गये है। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

परहेज :- गरिष्ठ भोजन, अधिक मसाले वाली चीजें, शराब व मांसाहार का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारतमाता स्कूल के सामने, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.)

बलिदान दिवस

अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता - वीर सावरकर

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। उन्हें प्रायः वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक विचारधारा (हिन्दुत्व) को विकसित करने का बहुत श्रेय सावरकर को जाता है। वे न केवल स्वाधीनता संग्राम के एक तेजस्वी सेनानी थे, अपितु महान् क्रान्तिकारी, चिन्तक, सिद्धान्त लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी राजनेता भी थे। वे एक ऐसे इतिहासकार भी हैं जिन्होंने हिन्दू राष्ट्र की विजय के इतिहास को प्रमाणिक ढंग से लिपिबद्ध किया है। उन्होंने १८५७ को प्रथम स्वातंत्र्य समर का सनसनीखेज व खोजपूर्ण इतिहास लिखकर ब्रिटिश शासन को हिला कर रख दिया था। २६ फरवरी १९६६ को बम्बई में भारतीय समयानुसार प्रातः १० बजे उन्होंने पार्थिव शरीर छोड़कर परमधाम को प्रस्थान किया। वीर सावरकर के ऊपर महर्षि दयानन्द आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश की कितनी गहरी छाप पड़ी हुई थी। छाप क्यों न पड़ें? इनके गुरु श्री श्यामकृष्ण वर्मा जो महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे।

समाचार प्रवाह

बिलासपुर में वैदिक भगवत् कथा एवं नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का सम्मान समारोह सोल्लास सम्पन्न

बिलासपुर। आर्य धर्मशाला न्यास दयानन्द सेवाधाम, अशोक नगर चांटीडीह बिलासपुर में दिनांक ८ से १० जनवरी २०१६ तक वैदिक भगवत् कथा महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज (संचालक, वैदिक वशिष्ठ आश्रम, सुंदरनगर हि.प्र.) एवं सुमधुर भजनोपदेश संगीता आर्या (सुविख्यात वैदिक भजनोपदेशिका सहारनपुर उ.प्र.) द्वारा सम्पन्न किया गया।

विशाल शोभा यात्रा, योगासन, व्यायाम एवं शौर्य प्रदर्शन

दिनांक ८ जनवरी २०१६ को प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक आर्यसमाज गोंड़पारा से दयानन्द सेवाधाम अशोक नगर तक विशाल शोभा यात्रा, योगासन, व्यायाम एवं शौर्य प्रदर्शन किया गया। सायं ४ बजे से ७ बजे तक यज्ञ, भजन एवं वैदिक भगवत् कथा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

यज्ञ, भजन एवं भगवत् कथा

दिनांक ९ जनवरी २०१६ को प्रातः ८ बजे से ११ बजे एवं सायं ४ से ७ बजे तक वैदिक भगवत् कथा महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज (संचालक, वैदिक वशिष्ठ आश्रम, सुंदरनगर हि.प्र.) के उपदेश व प्रवचन एवं सुमधुर भजनोपदेश संगीता आर्या (सुविख्यात वैदिक भजनोपदेशिका सहारनपुर उ.प्र.) द्वारा सम्पन्न हुआ।

यज्ञ की पूर्णाहुति एवं नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं अंतरंग सदस्यों का सम्मान

दिनांक १० जनवरी २०१६ को प्रातः ८ बजे से १० बजे तक पं. जयदेव शास्त्री के मार्गदर्शन में यज्ञ की पूर्णाहुति व प्रातः १० से १२.३० बजे तक भजन संगीत एवं वैदिक भगवत् कथा का समापन किया गया। तत्पश्चात् १२.३० बजे छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों व अंतरंग सदस्यों का सम्मान किया गया, जिसमें मुख्य रुप से श्री सोमप्रकाश गिरी उपप्रधान, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान, श्री गोपीराम आर्य उपप्रधान, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री एवं मुख्य अधिष्ठाता, श्री चतुर्भुज आर्य उपमंत्री, श्री तापेश्वर कुमार शर्मा अंतरंग सदस्य, श्री राजकुमार वर्मा अंतरंग सदस्य, पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी अंतरंग सदस्य, श्री नरेन्द्र आर्य अंतरंग सदस्य, श्रीमति गीता आर्या मंडल वेदप्रचार अधिष्ठाता, श्री रामअवतार आर्य वेदप्रचार अधिष्ठाता, श्री मनोहर आर्य आर्यसमाज कवर्धा का सम्मान किया गया। सम्मान कार्यक्रम में आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर के प्रधान श्री ज्योर्तिमय आर्य, श्री सुधीर गुप्ता, श्री सुदर्शन जायसवाल एवं आर्यसमाज के पदाधिकारी व अंतरंग सदस्यों की उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग के रुप में स्व. श्री सम्पतलाल जायसवाल (श्री सुदर्शन जायसवाल के पिताश्री) के स्मृति में दिनांक ८ से १० जनवरी २०१६ तीन दिनों तक की प्रसाद एवं ऋषि लंगर की व्यवस्था जायसवाल परिवार के सौजन्य से आयोजित था। इस तरह यह कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : बिलासपुर से लौटकर सभा मंत्री

तुलाराम आर्य विद्यालय लवन में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

लवन। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय लवन में ६७वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री रायपुर संभाग श्री चतुर्भुज आर्य द्वारा ध्वाजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर वार्ड के पार्षद, प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे।

-निज संवाददाता

आर्य विद्या सभा सलखिया एवं छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में

गुरुकुल आश्रम सलखिया का भव्य रजत जयंती महोत्सव सम्पन्न

सलखिया (रायगढ़) । दिनांक १५, १६ व १७ जनवरी २०१६ को गुरुकुल आश्रम सलखिया जिला रायगढ़ का भव्य रजत जयंती महोत्सव आर्य विद्या सभा एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें अपार जनसमूह आबालवृद्ध नर-नारियों सहित हजारों लोगों की तीनों दिन आवास एवं भोजन की सुव्यवस्था रही।

दिनांक १५ जनवरी २०१६ दिन शुक्रवार को प्रातः ११ बजे ओ३म् ध्वज उत्तोलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें सांसद माननीय विष्णुदेव साय एवं गुरुकुल के संरक्षक सरदार इन्दरपाल सिंह भाटिया रायगढ़, श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के करकमलों से ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित कुलदीप विद्यार्थी एवं साथी बिजनौर उ.प्र. एवं पं. कवीन्द्र आर्य तथा साथी ब्रह्मपुर उड़ीशा के सुमधुर उड़ीया एवं हिन्दी में भजनोपदेश एवं संगीत का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आमंत्रित राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् स्वामी देवानन्द सरस्वती जी (राजस्थान), स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती (वानप्रस्थ आश्रम गोपालपुर उड़ीशा), महात्मा चैतन्यमुनि एवं माता सत्यप्रिया यती (आनन्दधाम जम्मू कश्मीर), माननीय श्री रघुनंदन प्रसाद वानप्रस्थी (आर्य वानप्रस्थन आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार), आचार्य बृजेश जी (वैदिक साधना आश्रम गोवर्धनपुर अलीगढ़), आचार्या डॉ. गायत्री जी (मातृमंदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी उ.प्र.), आचार्या गीता आर्या (बाल्को कोरबा छ.ग.), आचार्य रणवीर शास्त्री (उपमंत्री सभा) आदि वैदिक विद्वानों के सारगर्भित उद्बोधन सम्पन्न हुये। कार्यक्रम का संचालन आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान एवं आचार्य बलदेव चण्डीगढ़ ने किया।

कार्यक्रम में सभा के प्रधान, मंत्री, उपमंत्री (श्री दिलीप आर्य, श्री चतुर्भुज आर्य, श्री रविशंकर आर्य, आचार्य रणवीर शास्त्री), उपप्रधान (श्री महिपतलाल आर्य, श्री दयाराम वर्मा), सभा कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य, अंतरंग सदस्य (श्री आनन्द कुमार भोई, श्री सुन्दरलाल आर्य, श्री वृन्दासेवक, श्री लेखनकार आर्य, श्री शोभाराम आर्य, श्री गुणनिधि आर्य, श्री प्रेमानन्द आर्य), प्रांतीय वेदप्रचार अधिष्ठा श्री कान्हूराम आर्य एवं आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री पंचमलाल आर्य, श्री कौशलप्रसाद पटेल व्यवस्थापक गायत्री शक्तिपीठ लैलूंगा (रायगढ़) विशेष रुप से उपस्थित रहे। स्व. श्री उज्ज्वलानन्द जी वानप्रस्थी द्वारा सन् १९८० में गुरुकुल आश्रम सलखिया प्रारंभ किया गया, जो आज २५ वर्षमें बहुत उन्नति की ओर निरन्तर अग्रसर है। संचालक श्री जोगीराम आर्य, सहसंचालक श्री त्रिनाथराम आर्य एवं गुरुकुल आश्रम सलखिया के समस्त शिक्षकगण समर्पित भाव से गुरुकुल के उन्नति में सहभागी हैं। आर्यसमाज कांसा से आचार्य रणवीर शास्त्री के नेतृत्व दो बड़ी बस में कुल ९४ श्रद्धालुजन कार्यक्रम में उपस्थित हुये। वर्तमान में २०० दुधारू गौवें ३५० गायें जो कि बूचड़ खाना जा रही थी, उससे छुड़ाकर लगभग ५५० गायों की विशाल गौशाला संचालित है।

दिनांक १६ जनवरी २०१६ को प्रातः १० बजे दस महानुभावों ने यज्ञ वेदी में आहूति देते हुये, स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती के करकमलों से वानप्रस्थ दीक्षा ग्रहण करते हुये उपस्थित जनसमूह में "भिक्षां देहि" कहते हुये भिक्षा अर्जन किये। जिसमें सभा मंत्री द्वारा सभा की ओर से १००० रु. प्रत्येक वानप्रस्थियों को दान दिया गया, उसी प्रकार सभा प्रधान के द्वारा सभा की ओर से १००-१०० रुपये प्रत्येक वानप्रस्थियों को दान दिया गया। कुल भिक्षा की राशि लगभग २२००० रु. प्राप्त कर समस्त वानप्रस्थियों ने दीक्षा गुरु स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती को सौंप दिया, जिसे स्वामी जी ने गुरुकुल आश्रम सलखिया को दान कर दिया। आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान जी ने सभा की ओर से समस्त वानप्रस्थियों के सहयोगार्थ १० हजार रुपये प्रतिमाह देने का संकल्प व्यक्त किया। निम्नलिखित नवीन वानप्रस्थियों ने

वानप्रस्थ दीक्षा ग्रहण की - महात्मा धरम मुनि (धनसिंह), महात्मा महिपत मुनि (महिपत गौटिया), महात्मा सोममुनि (हेमसागर), महात्मा चिन्तनमुनि (चिन्तामणि), महात्मा अमृत मुनि (गंगाधर), महात्मा ईश्वर मुनि (ईश्वर), महात्मा पूर्णमुनि (पुरणोराम), महात्मा योगमुनि (सोमनाथ), महात्मा दिव्य मुनि (दिलेश्वर), महात्मा कर्ममुनि (कार्तिक)।

छत्तीसगढ़ के एकमात्र नवोदित कन्या गुरुकुल गोहड़ीडिपा (राजपुर) जिला रायगढ़ के सुसंचालन के लिये महात्मा चैतन्यमुनि जी महराज द्वारा एक लाख रुपये दान की घोषणा की गई। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर द्वारा कन्या गुरुकुल के भवन निर्माणार्थ तीन लाख रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है। सभा द्वारा भी एक लाख रुपये का आर्थिक सहयोग दिया गया।

संवाददाता : सलखिया से लौटकर मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज सुकुलभटली में दिनांक ११ जनवरी २०१६ को एवं आर्यसमाज ससकोबा में दिनांक १२ जनवरी २०१६ को वेदप्रचार कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, महात्मा चैतन्यमुनि, माता सत्यप्रिया यती का सारगर्भित उद्‌बोधन हुआ।

आर्यसमाज मुड़ागांव में मकर संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज मुड़ागांव (रायगढ़) में दिनांक १४ जनवरी २०१६ को पूर्वाह्न ११ बजे मकर संक्रान्ति महापर्व सम्पन्न हुआ, जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, महात्मा चैतन्यमुनि, माता सत्यप्रिया यती के सैद्धान्तिक प्रवचन हुये।

आर्यसमाज बड़ेपन्धी में मकर संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज बड़ेपन्धी में दिनांक १४ जनवरी २०१६ को रात्रि १२ बजे तक मकर संक्रान्ति महापर्व का २२वाँ वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें समस्त ग्रामवासियों के अपार जनसमूह ने श्रद्धाभक्ति के साथ कार्यक्रम को सफल बनाया। उक्त कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रुप में आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली प्रान्तीय सभा, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री सह मुख्य अधिष्ठाता आदि पदाधिकारियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री

ग्राम गणेशपुर में वैदिक सत्संग सम्पन्न

गणेशपुर। डॉ. ललित कुमार निषाद के सौजन्य से ग्राम गणेशपुर में दिनांक १८ एवं १९ जनवरी २०१६ को कबीर साहेब सत्संग कार्यक्रम सुश्री चन्द्रकला साहेब दिव्य ज्योति आश्रम सोनारदेवरी पलारी जिला बलौदाबाजार के पावन सान्निध्य में उनके टीम के साथ कबीर भावधारा की पावन सलीला प्रवाहित हुई। दिनांक १८ जनवरी १६ को सायंकाल गायत्री शक्तिपीठ अभनपुर के श्री चौरसिया जी, श्री ओमप्रकाश जी, श्री बसंत कुमार जी के सौजन्य से दीप महायज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें गायत्री परिवार भावधारा की पावन सलिला प्रवाहित हुई।

दिनांक १९ जनवरी २०१६ को वैदिक सत्संग आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, स्वामी देवानन्द सरस्वती (राजस्थान) के प्रेरणादायक प्रवचन के साथ पण्डित रोशन कुमार धर्माचार्य आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सुमधुर भजन द्वारा वैदिक सत्संग कार्यक्रम सायंकाल ७ बजे से ९ बजे तक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा उपप्रधान एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा वर्मा श्री दयाराम वर्मा, आचार्य चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा, आचार्य बलदेव जी (चण्डीगढ़) आदि उपस्थित रहे। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार एवं आर्यसमाज की भावधारा की पावन सलिला प्रवाहित हुई, जिसमें बहुसंख्या में उपस्थिति रही।

संवाददाता : श्री दीनानाथ वर्मा, सभा मंत्री

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में ६७वाँ गणतन्त्र दिवस सम्पन्न

रायपुर। महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. माध्य. उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ६७वें गणतन्त्र दिवस समारोह दिनांक २६ जनवरी २०१६ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा जी द्वारा प्रातः ९ बजे ध्वजारोहण किया गया, साथ में श्री दयाराम वर्मा सभा उपप्रधान एवं पंडित कांशीनाथ चतुर्वेदी सभा अंतरंग सदस्य की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

प्रातः ९ बजे से ११.३० बजे तक विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। लगभग १६ कार्यक्रमों में विद्यालय के लगभग ६५ छात्र-छात्राओं ने रंगारंग प्रस्तुति दी। सभा मंत्री ने सभा उपप्रधान एवं अंतरंग सदस्य सलाह लेकर प्रत्येक छात्र-छात्रा जो कि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, उन्हें सभा की ओर से १००-१०० रुपये की नगद प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई। इस कार्यक्रम को पूर्ण रुप से सफल बनाने में अपना अमूल्य योगदान देने वाली शिक्षिकाओं को भी १००-१०० रुपये की नगद राशि देने की घोषणा की गई। ११.३० बजे से पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुई, जिसमें सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा उपप्रधान श्री दयाराम वर्मा, पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध, मंत्री डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी एवं वरिष्ठ अंतरंग सदस्य श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा की सहभागिता रही। कार्यक्रम के समापन अवसर पर सभा मंत्री ने अपने उद्बोधन में - "आ ब्रह्मन्....." यजुर्वेद के इस मन्त्र के द्वारा जो कि राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ उद्बोधन प्रारम्भ करते हुये स्वतंत्रता संग्राम में और स्वतंत्रता के लिये सफल प्रयास करने में महर्षि दयानन्द एवं शिष्य आर्यसमाजियों के महत्वपूर्ण सहयोग का उल्लेख करते हुये काका हाथरसी की निम्ननलिखित कविता का पाठ किया -

नत मस्तक सब आर्यजन, करते तुम्हें प्रणाम।
अजर अमर है विश्व में, दयानन्द का नाम॥
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पाई।
भूले भटके जन गण मन को राह दिखाई॥
गोरे भारत नहीं छोड़ते, राजी-राजी।
अगर न देते योग, देश में आर्यसमाजी॥

कार्यक्रम में समस्त छात्र-छात्राओं, शिक्षक-शिक्षिकाओं, प्राचार्य, उपप्राचार्य, महर्षि दयानन्द सेवाश्रम के प्रबंधक श्री लोकनाथ आर्य, कार्यकर्तागण एवं गणमान्य नागरिकों के साथ बच्चों के पालकगण लगभग १००० की उपस्थिति रही। ***संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा. विद्या. टाटीबन्ध रायपुर***

आर्यसमाज कांसा द्वारा वेदप्रचार

कांसा। आर्यसमाज कांसा के संयोजन में हि.प्र. से पधारे महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माँ सत्यप्रिया यति जी ने १९ से २६ जनवरी २०१६ तक छः गांवों में वेद प्रचार किया। सबसे पहले ग्राम नंदेली (रायगढ़) में १९ से २१ जनवरी १६ तक प्रतिदिन २ से ५.३० बजे तक भजन व वेद प्रवचन हुआ। जिसमें नंदेली के व पास के गांव से प्रतिदिन २०० से २५० लोग श्रद्धा से प्रवचन सुनने आते थे। इस पूरे कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में श्री लालकुमार जी पटेल, श्री घनश्याम पटेल, श्री जयनारायण पटेल एवं साथियों ने खूब मेहनत की। इसी प्रकार ग्राम कोटमी में श्री उमाशंकर पटेल एवं साथियों के उत्साहपूर्ण प्रयास से २२ से २५ जनवरी १६ तक वेद प्रचार का कार्यक्रम हुआ। इसके अतिरिक्त ग्राम ओड़ेकरा, लखाली, कटेकोनी एवं आर्यसमाज कांसा में एक-एक समय का कार्यक्रम हुआ। इन सभी जगहों में लोगों ने रुचि से आचार्य जी के प्रवचन एवं माता जी का भजन सुने।

सभा कार्यालय में गणतंत्र दिवस सम्पन्न

दुर्ग। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, विद्युत सुरक्षा विभाग, आर्यसमाज आर्यनगर दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में दयानन्द परिसर प्रांगण में गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रातः ८.३० बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम सभा कार्यालय में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा कार्यालय के कर्मचारी, विद्युत सुरक्षा विभाग के समस्त कर्मचारी मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

- निजी संवाददाता

महाप्रयाण-आचार्य बलदेव जी

"कीर्तिर्यस्य स जीवति"

तप, त्याग, निष्ठा, ब्रह्मचर्य के मूर्तिमान् रुप वेदभक्त, गौभक्त, ईश्वर- भक्त, वेद वेदाङ्गों के तलस्पर्शी समर्पित विद्वान, हजारों वैदिक विद्वानो के निर्माता, दयानन्दध्येयधर्मा, अनेक संस्थाओं के संचालक, अन्तर्राष्ट्रीय योग गुरु बाबा रामदेव के पूजनीय गुरु, आर्ष गुरुकुल कालवा के आचार्य, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के घनघोर समर्थक, आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान आचार्य बलदेव जी का महाप्रयाण दिनांक २८ जनवरी २०१६ को दयानन्द मठ रोहतक हरयाणा में हो गया। यह घटना सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए एक महती अपूरणीय क्षति है। इससे आर्यजगत् अपने आप में ठगा सा महसूस कर रहा है। आदरणीय आचार्य जी का कार्यक्षेत्र केवल हरियाणा राज्य में ही सिमट कर नहीं था, प्रत्युत देश के कोने-कोने तक वैदिक धर्म के प्रचार के लिये एवं गौशालाओं के निर्माण के लिए वे यावज्जीवन निरन्तर भ्रमण करते रहे। वे गुरुकुल के माध्यम से आर्ष पद्धति के वैदिक विद्वान निर्माण के साथ-साथ प्राचीन भारत की समृद्धि का आधार गौवंश की दिन-प्रतिदिन घटती हुई संख्या से बेहद चिंतित थे, इसलिए गौ-पालन, पोषण एवं संरक्षण हेतु निरन्तर प्रयत्नशील थे। कोई भी किसान उनकी सेवा में गौपालन की इच्छा से जाता था, तो उन्हें अक्सर निःशुल्क गौवंश का वितरण किया करते थे। **गावो विश्वस्य मातरः** इस वैदिक ऋचा को उन्होने अपने जीवन में मानो आत्मसात् कर लिया था। उनकी प्रेरणा से सैकड़ों गौ-शालाएं देश में संचालित होकर गौवंश की वृद्धि में एक बहुत बड़ा योगदान कर रही है। वैदिक विद्वान् निर्माण की दृष्टि से यदि हम आचार्य जी के अवदानों पर विचार करें, तो पायेंगे वर्तमान आर्य जगत् का एक बहुत बड़ा समर्पित समूह नजर आता है। अधिकांश क्षेत्रों में वैदिक धर्म की दुंदुभी बजाने वाले आर्य मिशनरियों में आचार्य जी की एक प्रेरक छबि स्पष्ट अनुभव की जा सकती है। उनके असामयिक महाप्रयाण पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना करते हैं।

– सम्पादक

तुलाराम आर्य विद्यालय कूरा में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

कूरा । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित विद्यालय प्रांगण में ६७वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री (कार्यालय) एवं मुख्य अधिष्ठाता श्री दिलीप आर्य द्वारा ध्वाजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे।

- निज संवाददाता

तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय दुर्ग में गणतंत्र दिवस समारोह एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दुर्ग । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. दुर्ग में ६७वाँ गणतंत्र दिवस समारोह एवं विद्यालय का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा ध्वाजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे।

- निज संवाददाता

घोषणा - पत्र

(फार्म - 4 नियम - ८)

◆ प्रकाशन का स्थान	-	दुर्ग (छ.ग.)
◆ प्रकाशन की अवधि	-	मासिक
◆ भाषा	-	हिन्दी
◆ मुद्रक का नाम	-	आचार्यअंशदेव आर्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग (छ.ग.)
क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
◆ प्रकाशक का नाम	-	आचार्य अंशुदेव आर्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
◆ सम्पादक का नाम	-	आचार्य कर्मवीर
क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
पता	-	छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)
◆ उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार है।	-	छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

मैं आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर

आचार्य अंशुदेव आर्य

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा**। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

फरवरी 2016
डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2015-17
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमा

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय लवन में सम्पन्न गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

ध्वजारोहण करते हुये
सभा के उपमंत्री चतुर्भुज आर्य

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।